G20

आज़ादी का अमृत महोत्सव

हडको

देवालय

तृतीय अंक- वर्ष-2023

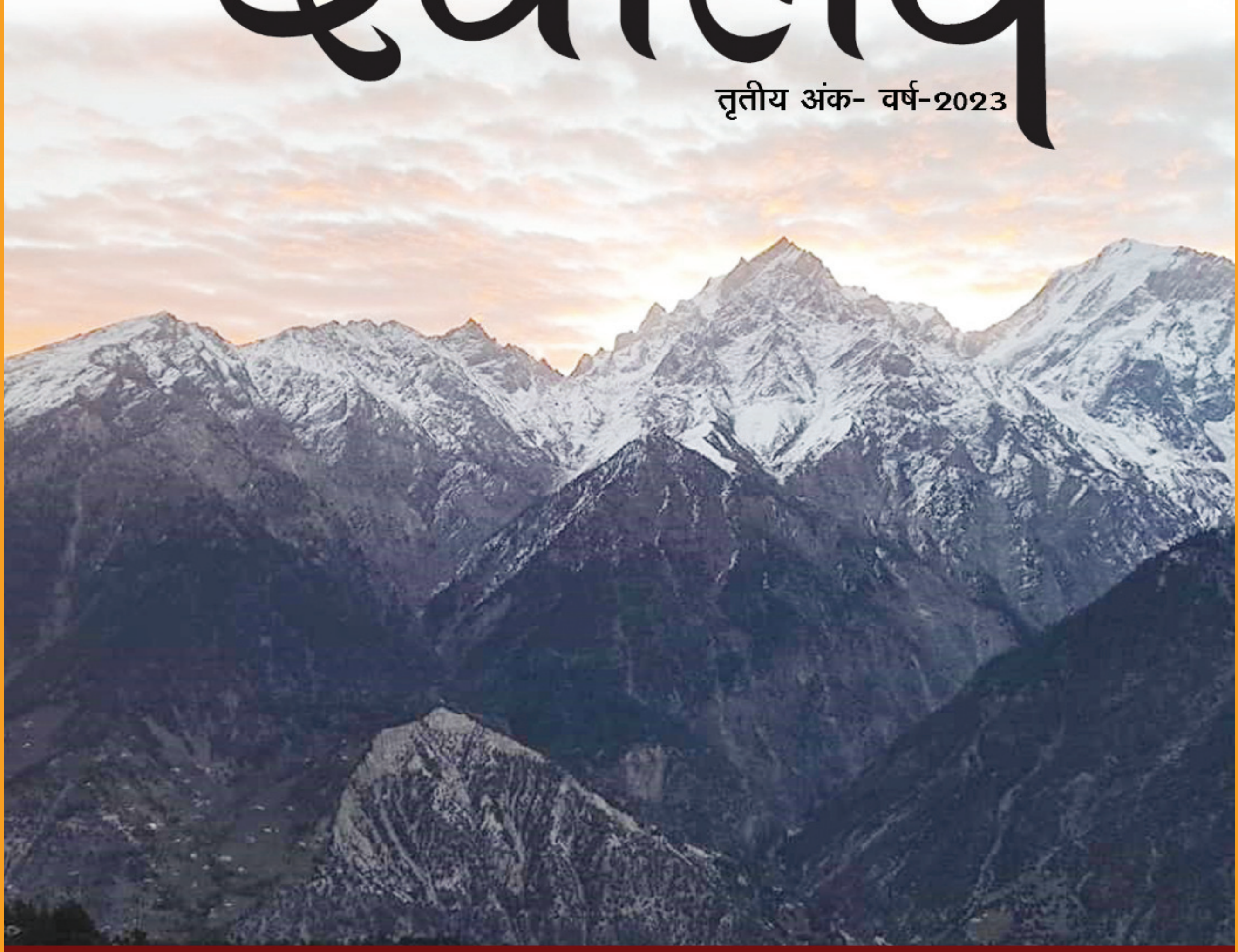

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून

संरक्षक एवं मुख्य संपादक
श्री संजय भार्गव,
क्षेत्रीय प्रमुख

संपादक
श्री अशोक कुमार लालवानी,
संयुक्त महाप्रबन्धक(वित्त)/नोडल अधिकारी(राजभाषा)

सह संपादक एवं परिकल्पना
श्री बलराम सिंह चौहान,
प्रबन्धक(आईटी)/नोडल सहायक (राजभाषा)

विशिष्ट मार्ग दर्शन
श्री विवेक प्रधान, प्रबन्धक (परियोजना)
श्री शंकर चौधरी, प्रबन्धक (विधि)

अनुक्रमाणिका

संदेश	1-8
सम्पादकीय	9
गृह पत्रिका का विमोचन, नराकास द्वारा पुरस्कृत, हिन्दी पखवाड़ा एवं राजभाषा का प्रचार-प्रसार	10-12
पुरस्कार एवं सम्मान	13-14
निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग) का देहरादून प्रवास एवं शीर्षास्थ बैठकों का विवरण	15-18
उत्तराखण्ड राज्य में हडको की गतिविधियां:-	
वित्त पोषित परियोजनाओं के फोटोग्राफ	19
हडको - केएफडब्ल्यू ग्रांट से निर्मित सामुदायिक भवन का लोकार्पण	20
किफायती आवास - चुनौतियां और अवसर कार्यशाला में प्रतिभागिता	21
मेगा प्रदर्शनी में प्रतिभागिता	22-23
सतर्कता जागरुकता सप्ताह का आयोजन	24
विश्व रक्तदाता दिवस का आयोजन	25
आजादी के अमृत महोत्सव पर वृक्षारोपण	26
साहित्य रचनायें:-	
एक अण्डे का स्वागत गान (डॉ. जितेन ठाकुर, वरिष्ट साहित्यकार) बैठकों में आमंत्रित सदस्य	27-28
प्रेम-गली मनभवनी (श्री मुकेश नौटियाल, वरिष्ठ कथाकार) बैठकों में आमंत्रित सदस्य	29
कार्यालय कर्मियों एवं आश्रित्रों से प्राप्त लेख/कविताएं:-	
जय हो उत्तराखण्ड -कविता (श्री आलोक तोमर, वरिष्ठ आईटी सलाहकार, उत्तराखण्ड शासन)	30
भ्रष्टाचार मुक्त भारतः विकसित भारत (श्री रविन्द्र कुमार)	31
जौनसार-बावर में 'बूढ़ी दीवाली' (श्रीमती मंजूला चौहान पत्नी श्री बी.एस. चौहान)	32-33
आजादी का अमृत महोत्सव (स्व. श्री जगदीश चन्द्र पाठक)	34
अनसुना शोर - कविता (सुश्री आरुषी लालवानी)। पहाड़ की पीड़ा - कविता (श्री धर्मानंद भट्ट)	35
चित्र अभिव्यक्ति (श्री अशोक कुमार लालवानी)	36
राजाजी नेशनल पार्क का सैर-सपाटा	37
अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस	38
घस्यारी रानी	39
महापुरूषों सी सूक्तियां	40

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि की हडको क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून अपनी गृह पत्रिका **'देवालय'** के तृतीय अंक का प्रकाशन कर रहा है। गृह पत्रिकाएं समकालीन विचारणीय विषयों की प्रस्तुति मात्र ही नहीं होती, वरन भावी प्रगति की पूर्वपीठिका का कार्य भी करती हैं। यह सुखद सूचना है कि **'देवालय'** के उत्कृष्ट प्रकाशन के लिए देहरादून क्षेत्रीय कार्यालय गत वर्षों से भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय -2) की ओर से पुरस्कार प्राप्त करता रहा है।

राजभाषा के प्रति पूर्ण समर्पण के साथ-साथ देहरादून क्षेत्रीय कार्यालय उत्तराखण्ड राज्य के विकास में कई वर्षों से विभिन्न योजनाओं में वित्तपोषण के माध्यम से अहम भूमिका निभाते हुए उत्तराखण्ड राज्य के विकास में भी अपना अनुपम योगदान दे रहा है।

मैं देहरादून क्षेत्रीय कार्यालय के सभी कार्मिकों तथा पत्रिका के संपादक मंडल को इस ज्ञानवर्द्धक पत्रिका के प्रकाशन के लिए बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित

एम. नागराज
निदेशक कॉर्पोरेट (प्लानिंग)

पुष्कर सिंह धामी

मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड सचिवालय
देहरादून– 248001
सचिवालय फोन: 0135–2716262
0135–2650433
फैक्स: 0135–2712827
विधान सभा फोन: 0135–2665100
0135–2665497
फैक्स: 0135–2666166
Email: cm-ua@nic.in

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि **हाउसिंह एण्ड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लि. ''हडको'',** (भारत सरकार का उपक्रम), क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून द्वारा अपनी गृह पत्रिका ''देवालय'' के प्रथम एवं द्वितीय अंक के सफल प्रकाशन के पश्चात तृतीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। हडको आवास एवं बुनियादी ढांचे के विकास के क्षेत्र में प्रमुख तकनीकी वित्त पोषित सार्वजनिक क्षेत्र का उद्यम है। यह भी अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि हडको देश में आवास एवं शहरी विकास की गति को तेज करने के लिए वित्त पोषण कार्यों के अतिरिक्त परामर्श सेवायें भी प्रदान करता है। यह अनुसंधान एवं अध्ययन को बढ़ावा देने के साथ-साथ स्थानीय विकास सामग्री, लागत प्रभावी और अभिनव निर्माण प्रौद्योगिकियों के प्रचार-प्रसार में मदद करता है। मुझे आशा है कि इस गृह पत्रिका में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ नए निर्माण की तकनीकी आदि के बारे में जानकारी देने का प्रयास किया जायेगा। मुझे यह भी आशा है कि इस पत्रिका में उत्तराखण्ड राज्य की समृद्ध संस्कृति एवं प्रकृति की जानकारी भी सम्मिलित होगी जो समाज व लोगों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी। यह कार्य निःसंदेह प्रशंसनीय है।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं और प्रकाशन मंडल के सभी अधिकारियों और सदस्यों को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

(पुष्कर सिंह धामी)

प्रेम चन्द अग्रवाल
मंत्री
वित्त, शहरी विकास एवं आवास
विधायी एवं संसदीय कार्य,
पुनर्गठन एवं जनगणना

उत्तराखण्ड सरकार

विधान सभा भवन
देहरादून-248001
दूरभाष-0135-2665155
0135-2665399 (फैक्स)

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि 75वें आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर हाऊसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लि. ''हडको'', (भारत सरकार का उपक्रम), क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून द्वारा हडको की पत्रिका ''देवालय'' का तृतीय अंक प्रकाशित किया जा रहा है। हडको परिवार का यह प्रयास अत्यन्त सराहनीय है।

ऐसी आशा है कि जहां उक्त पत्रिका के माध्यम से हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ गृह निर्माण की नई-नई तकनीकी संबंधित जानकारियों से आम जन-मानस को लाभ प्राप्त होगा, वहीं उत्तराखण्ड राज्य की समृद्ध संस्कृति एवं प्रकृति का समावेश भी रहेगा। हुडको का यह प्रयास प्रशंसनीय ही नहीं, अपितु समाज व आम जन-मानस के लिए लाभप्रद भी सिद्ध होगा।

हाऊसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लि. ''हडको'', देहरादून द्वारा प्रकाशित पत्रिका ''देवालय'' की लोकप्रियता एवं सफलता हेतु मैं, संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं ज्ञापित करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

Chand

प्रेम चन्द्र अग्रवाल

संदेश

मुझे यह जानकर अपार प्रसन्नता हो रही है, कि हाऊसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लि. ''हडको'', (भारत सरकार का उपक्रम), क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून अपनी गृह पत्रिका ''देवालय'' के **प्रथम एवं द्वितीय अंक** के सफल प्रकाशन के पश्चात **तृतीय अंक** प्रकाशित कर रहा है। मैं इस पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं साथ ही प्रकाशन मण्डल के सभी पदाधिकारियों व सदस्यगणों को बहुत-बहुत बधाई देता हूं।

मुझे आशा है इस गृह पत्रिका में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ गृह निर्माण की नई-नई तकनीकी से संबंधित जानकारी व उत्तराखण्ड राज्य की समृद्ध संस्कृति एवं प्रकृति का समावेश भी रहेगा। हडको क्षेत्रीय कार्यालय का यह प्रयास प्रशंसनीय है तथा समाज व लोगों के लिए लाभप्रद सिद्ध होगा।

शुभकामनाओं सहित।

राम राज द्विवेदी
सदस्या सचिव, नराकास (का-2)
राजभाषा विभाग, ओएनजीसी,
देहरादून

संदेश

सरकारी कार्य में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने और उसे समृद्ध करने के उद्देश्य से हडको क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून ने राजभाषा ई-पत्रिका **'देवालय'** के तृतीय अंक का प्रकाशन किया है। यह एक सराहनीय प्रयास है।

राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु हमें सदैव सृजनात्मक कार्य करते रहना चाहिए ताकि जीवन ऊर्जामय और आनंदमय बना रहे। आशा करता हूँ कि गृह-पत्रिका के ई- संस्करण से हिन्दी का प्रसार एवं प्रभाव दोनों ही बढ़ेंगे तथा भारत सरकार की मितव्ययता नीति को भी बढ़ावा मिलेगा। देहरादून क्षेत्रीय कार्यालय इस सराहनीय प्रयास के लिए बधाई का पात्र है।

शुभकामनाओं सहित

डी. गुहन
निदेशक (वित्त)

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून की हिन्दी गृह पत्रिका **'देवालय'** के तृतीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। हडको क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन किया जाना सराहनीय कार्य है। पत्रिका के प्रकाशन से कार्यालय के सभी कार्मिकों को अपनी सृजनात्मक अभिव्यक्ति का अवसर तो मिलता ही है, साथ ही सरकारी कामकाज हिन्दी में करने के प्रति उनकी रुचि भी बढ़ती है।

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों, कर्मचारियों, रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई।

शुभकामनाओं सहित

अरुण कुमार चतुर्वेदी
प्रमुख सतर्कता अधिकारी

संदेश

विचार विनिमय के लिए भाषा के सरल, सहज व स्वीकार्य होने की आवश्यकता पर सदैव बल दिया जाता रहा है। हिंदी भाषा में मानवीय अपेक्षित गुणों की प्रचुरता है। इसके माध्यम से अपनी बात को आसानी से समझाया जा सकता है। देहरादून क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा हिन्दी ई-पत्रिका **'देवालय'** के तृतीय अंक का प्रकाशन सराहनीय प्रयास है।

सरकारी कामकाज में राजभाषा प्रयोग की दृष्टि से यह पत्रिका बहुत उपयोगी सिद्ध होगी । पत्रिका प्रकाशन में जुटे सभी कार्मिकों एवं संपादक मंडल को मेरी ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

शुभकामनाओं सहित

सुरेन्द्र कुमार

सुरेन्द्र कुमार
महाप्रबंधक (राजभाषा)

संदेश

यह गर्व का विषय है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं उन्नयन की दृष्टि से अपनी हिन्दी गृह पत्रिका **'देवालय'** के प्रथम एवं द्वितीय अंक के सफल प्रकाशन के पश्चात तृतीय अंक का प्रकाशन कर रहा है। भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन एवं हिन्दी भाषा के प्रचार- प्रसार की दिशा में निःसंदेह यह एक सराहनीय प्रयास है। सृजनात्मकता की दृष्टि से क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून के सभी कार्मिक एवं संपादक मंडल इस उत्कृष्ट कार्य के लिए बधाई के पात्र हैं।

मैं आशा करता हूँ कि क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून भविष्य में भी राजभाषा हिन्दी की प्रगति की दिशा में इस प्रकार के सकारात्मक प्रयासों के लिए सदैव तत्पर रहेगा।

शुभकामनाओं सहित

डॉ. आलोक जोशी
कार्यकारी निदेशक (राजभाषा)

सम्पादकीय

गृह पत्रिका ''देवालय'' के तृतीय अंक अपने नये कलेवर और साज सज्जा के साथ आपके हाथों में है। गत दो वर्षों से प्रारम्भ हुआ ये सफर नये आयामों, रचनाकारों को अपने साथ मिलाकर लगातार जारी है। शुरूआत बहुत मुश्किल थी और लक्ष्य था साहित्य के माध्यम से विभागीय कार्यकलापों, सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी को उसका उचित और गौरवपूर्ण स्थान दिलाना। यह उद्देश्य लगभग पूरा हो चुका है और हम निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर अपना विभागीय कार्य कर रहे हैं। इसमें अब हिन्दी में कार्य करने वाले को दोयम श्रेणी में नहीं रखा जाता। विभागीय पत्रिकाओं का उद्देश्य सरकारी कामकाज में हिन्दी को प्रोत्साहित करने के अतिरिक्त विभागीय प्रतिभाओं को लेखन का मंच प्रदान करने के साथ-साथ अन्य गतिविधियों की जानकारी प्रदान करना भी होता है ''देवालय'' अपने इस उद्देश्य में पूर्णतः सफल रही है। बहुत से नये रचनाकारों को पत्रिका में स्थान मिला है और वे हिन्दी में रचनाएं लिख रहे हैं। सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को लेकर कई बार राजभाषा समिति ने कार्यालय की सराहना की है जिस हेतु पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं। मुझे ये लिखते हुए प्रसन्नता होती है कि हमारे सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हिन्दी को प्रोत्साहित करने में बहुत योगदान रहा है मुख्यालय द्वारा अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा हिन्दी में किए जा रहे कार्यों के लिए प्रोत्साहित किया गया है।

अंत में मैं ''देवालय'' पत्रिका से जुड़े सभी सदस्यों को नये अंक के प्रकाशन की बधाई देता हूं और आपकी प्रतिक्रियाओं का स्वागत है।

संजय भार्गव
क्षेत्रीय प्रमुख

निदेशक(कॉर्पोरेट प्लानिंग) द्वारा गृह पत्रिका 'देवालय' के द्वितीय अंक का विमोचन

श्री एम. नागराज, निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग), डॉ. आलोक कुमार जोशी, कार्यकारी निदेशक(परियोजना), श्रीमती उपिन्दर कौर, महाप्रबंधक (राजभाषा), श्री नरेंदर कुमार, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) हडको मुख्यालय की उपस्थिति में दिनांक 14 मई, 2022 को हडको क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून में हुई बैठक में गृह पत्रिका 'देवालय' के द्वितीय अंक का विमोचन किया गया। यह पत्रिका 'आजादी का अमृत महोत्सव' के थीम पर प्रकाशित हुई है। निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग) एवं कार्यकारी निदेशक (परियोजना) एवं अधिकारियों द्वारा हिंदी भाषा में देहरादून क्षेत्रीय कार्यालय के कार्यों की भी सराहना की तथा इस शानदार पत्रिका प्रकाशन के लिए बहुत-बहुत बधाई दी। श्री संजय भार्गव, क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा इस विमोचन हेतु धन्यवाद दिया।

देहरादून क्षेत्रीय कार्यालय की गृह पत्रिका 'देवालय' नराकास द्वारा पुरस्कृत

भारत सरकार गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-2), देहरादून
प्रशस्ति-पत्र
यह प्रशस्ति पत्र हडको क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून को वर्ष 2021-22 में प्रकाशित उत्कृष्ट गृह-पत्रिका "देवालय" को तृतीय स्थान प्राप्त करने के लिए प्रदान किया गया।
(राम राज द्विवेदी)
(आर. एस. नारायणी)

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-2), राजभाषा विभाग, ओएनजीसी देहरादून की वर्ष 2022-23 की द्वितीय छमाही बैठक दिनाँक 29 नवम्बर, 2022 को ओएनजीसी, केडीएमआईपीई सभागार, देहरादून में आयोजित हुई। इस बैठक में श्री अजय कुमार चौधरी, सहायक निदेशक, राजभाषा विभाग, भारत सरकार, गाजियाबाद, श्रीमती आर.एस. नारायणी, अध्यक्षा नराकास एवं श्री राम राज द्विवेदी, सदस्य सचिव नराकास, भारत सरकार, ओएनजीसीराजभाषा विभाग द्वारा हडको क्षेत्रीय कार्यालय देहरादून की गृह पत्रिका 'देवालय' को वर्ष 2021-22 में प्रकाशित उत्कृष्ट गृह-पत्रिका अंतर्गत तृतीय पुरस्कार (शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र) से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार क्षेत्रीय प्रमुख, श्री संजय भार्गव, संयुक्त महाप्रबंधक(वित्त)/नोडल अधिकारी(रा.भा.), श्री अशोक कुमार लालवानी एवं प्रबंधक (आईटी), श्री बलराम सिंह चौहान ने ग्रहण किया।

राजभाषा हिन्दी पखवाड़ा

हिन्दी दिवस का आयोजन

हडको क्षेत्रीय कार्यालय देहरादून में दिनांक 14.09.2022 को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ पत्राकार, मनमोहन भट्ट को आमंत्रित किया गया तथा श्री भट्ट द्वारा राजभाषा हिन्दी दिवस के विषय में तथा राजभाषा हिन्दी की उन्नति व प्रगति यात्रा की जानकारी से सभी को अवगत कराया गया। इसके साथ ही क्षेत्रीय प्रमुख, संजय भार्गव द्वारा दिनांक 15 से 30 सितम्बर, 2022 तक राजभाशा हिंदी पखवाड़े का आयोजन करने व इस पखवाड़े में अधिक से अधिक हिंदी में कार्य करने का अनुरोध किया गया।

राजभाषा हिन्दी पखवाड़े का ऑनलाइन शुभारंभ

हडको में हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ, राजभाषा के प्रचार प्रसार की आयोजित की जायेगी विभिन्न प्रतियोगितायें

दिनांक 15.09.2022 को गुजरात (सूरत) से अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में हडको की ओर से प्रतिभागिता कर रहे निदेशक कॉरपोरेट प्लानिंग, एम. नागराज द्वारा हिंदी राजभाषा पखवाड़े का ऑन लाइन शुभारंभ किया गया। इस बैठक में क्षेत्रीय कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। हिन्दी पखवाड़े का आयोजन दिनांक 15 से 30 सितम्बर, 2022 तक किया गया। इस दौरान स्लोगन लेखन, आशुभाषण, चित्र अभिव्यक्ति, शब्द ज्ञान, कविता पाठ एवं हिन्दी निबंध प्रतियोगिताएं की गई। दिनांक 15.09.2022 को कार्यालय में भाषा विज्ञान पर कार्यशाला में हिंदी एवं भाषा विज्ञान पर वरिष्ठ शोधकर्ता डॉ. कमला पंत को विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। उनके द्वारा भाषा विज्ञान की बारीकियों एवं राजभाषा हिंदी के एतिहासिक परिपेक्ष्य में अपना व्याख्यान दिया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. अजीत गैरोला एवम क्षेत्रीय कार्यालय के समस्त कर्मियों द्वारा इस सत्र की सराहना की गई जिसमें भाषा संबंधी ज्ञान को समझने, लिखने एवं बोलने की कला को और प्रभावी रूप से समझाया गया।

हिंदी एवं भाषा विज्ञान वरिष्ठ शोधकर्ता डॉ. कमला पंत को सम्मानित करते हुए

हडको क्षेत्रीय कार्यालय देहरादून में आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन

दिनांक 19.09.2022 को मुख्य अतिथि वरिष्ठ कथाकार, मुकेश नौटियाल को आमंत्रित किया गया। इस दिन कार्यालय में आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजित की गई। आशुभाषण का विषय 'उत्तराखंड राज्य की विकास यात्रा के 20 वर्षों में उपलब्धियां एवं चुनौतियों' तथा विश्वयुद्ध की आहट बढ़ता मानवता के अस्तित्व पर संकट दिया गया, हर प्रतिभागी को 03 मिनट का समय दिया गया। इस प्रतियोगिता में विजेताओं की घोषणा मुकेश नौटियाल द्वारा की गई। प्रतियोगिता में रविंद्र कुमार प्रथम, अशोक लालवानी द्वितीय, विवेक प्रधान तृतीय रहे। क्षेत्रीय प्रमुख, संजय भार्गव द्वारा पूर्व मे आयोजित स्लोगन प्रतियोगिता में 'राष्ट्रीय एकता एवं देश के विकास में हिंदी का योगदान' विषय के परिणाम घोषित किए, सभी हडको कर्मियों ने इन प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर भाग लिया। कर्मचारी वर्ग में धर्मानंद भट्ट प्रथम, रविंद्र द्वितीय एवं वैशाली तृतीय रहीं। अधिकारी वर्ग में बलराम सिंह चौहान प्रथम, अशोक कुमार लालवानी द्वितीय एवं जगदीश पाठक तृतीय रहे। नौटियाल द्वारा राजभाषा हिंदी के विकास पर व्याख्यान दिया तथा अपने साहित्य विषय के गूढ़ विचारों से अवगत कराया। कार्यक्रम का समापन राजभाषा नोडल अधिकारी, अशोक कुमार लालवानी एवं नोडल सहायक, शंकर चौधरी के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

वरिष्ठ कथाकार, श्री मुकेश नौटियाल को देवालय पत्रिका भेंट करते हुए

दिनांक 28.09.2022 को उत्कृष्ठ कवि, संजीव जैन 'साज', अधीक्षक अभियंता, सिंचाई विभाग, देहरादून को आमंत्रित किया गया। जिनके मार्गदर्शन में क्षेत्रीय कार्यालय में कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सभी प्रतिभागियों द्वारा पूर्ण रुचि के साथ प्रतिभाग किया गया, सभी ने स्वरचित व अन्य कविता का पाठ किया तथा संजीव जैन द्वारा इस प्रतियोगिता के विजेताओं की भी घोषणा की गई। कार्यक्रम का समापन नोडल अधिकारी (राजभाषा) अशोक कुमार लालवानी के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ। क्षेत्रीय प्रमुख, संजय भार्गव की अध्यक्षता में दिनांक 29.09.2022 को बैठक एवं कार्यशाला का अयोजन किया गया। अशोक कुमार लालवानी, नोडल अधिकारी (रा.भा.) द्वारा हडको देहरादून क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा हिंदी में किए जा रहे कार्यों एवं हिंदी से सम्बंधित नियमों एवं उनका पालन इत्यादि से अवगत कराया। पखवाड़ा समापन की पूर्व संध्या पर मुख्य अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार जीतेन ठाकुर को आमंत्रित किया गया। हडको कार्यालय में क्षेत्रीय प्रमुख, संजय भार्गव द्वारा निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं की भी घोषणा की गई। अधिकारी वर्ग में अशोक लालवानी प्रथम, विवेक प्रधान द्वितीय एवं बलराम सिंह एवं शंकर चौधरी संयुक्त रूप तृतीय स्थान पर रहे। कर्मचारी वर्ग में रविंद्र प्रथम, प्रताप लाल द्वितीय, लक्ष्य तृतीय एवं धर्मानंद भट्ट व वैशाली तृतीय स्थान पर रहे। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार जीतेन ठाकुर एवं विशेष अतिथि डॉ. अजीत गैरोला ने विजेताओं को बधाई दी। जीतेन ठाकुर द्वारा अपनी लिखी कहानी भी सुनाई। कार्यक्रम का समापन राजभाषा नोडल अधिकारी, अशोक कुमार लालवानी एवं नोडल सहायक, शंकर चौधरी के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ। दिनांक 30 सितम्बर, 2022 तक राजभाषा हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन अंतर्गत राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार एवं प्रतियोगिता का आयोजन तथा भाग लेने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। क्षेत्रीय प्रमुख, हडको क्षेत्रीय कार्यालय देहरादून ने कार्यालय में हिंदी के प्रचार एवं प्रसार को बढ़ाने हेतु प्रभावी सुझाव दिये। क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा हिंदी के कार्यों में बढ़ोत्तरी हेतु पूर्व में जारी दिशा निर्देशों की पुनः चर्चा की गई और सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अधिक से अधिक हिंदी में वार्तालाप एवं कार्य करने का अनुरोध किया गया।

मुख्य अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार जीतेन ठाकुर को सम्मानित करते हुए

हिन्दी में उत्कृष्ट कार्यों हेतु पुरस्कार

श्री बलराम सिंह चौहान
प्रबंधक, आईटी

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-2), देहरादून की वेबेक्स के माध्यम से दिनांक 29.06.2022 को हुई छः माही बैठक में सदस्य सचिव, नराकास, राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2021-22 हिन्दी में किए जा रहे उत्कृष्ट कार्यों के लिए हडको क्षेत्रीय कार्यालय देहरादून को प्रोत्साहन पुरस्कार शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र दिए जाने की घोषणा की गई तथा दिनांक 21.07.2022 को श्रीमती आर.एस. नारायणी, नराकास, अध्यक्ष, कार्यकारी निदेशक, ओ.एन.जी.सी. एवं श्री रामराज द्विवेदी, सदस्य सचिव नराकास-2 से क्षेत्रीय प्रमुख श्री संजय भार्गव, संयुक्त महाप्रबंधक (वित्त) श्री अशोक कुमार लालवानी एवं प्रबंधक (आईटी) श्री बलराम सिंह चौहान द्वारा प्राप्त किया गया। प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्ति पर क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा अवगत कराया गया कि बलराम सिंह चौहान, प्रबंधक, आईटी एवं जगदीश चन्द्र पाठक, उप प्रबंधक, वित्त, द्वारा हिन्दी में किए गए कार्यों की सराहना की।

प्राप्त पुरस्कार, शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, 'नराकास' से गत 2 वर्षों में प्राप्त पुरस्कार

सोलिड वेस्ट मैनेजमेंट क्षेत्र में योगदान के लिए हडको सम्मानित

CERTIFICATE OF APPRECIATION
Presented to
HUDCO
It is our privilege to acknowledge and express our appreciation for your valuable contribution to the field of Solid Waste Management. We look forward to further collaborating with you in the mission towards solving the Waste Crisis in the Indian Himalayan Region.
WASTE WARRIORS
10th Anniversary
DEHRADUN
VISHAL K KUMAR
Chief Executive Officer

वेस्ट वॉरियर्स संगठन द्वारा हडको को ठोस अपशिष्ट प्रबंधन (सोलिड वेस्ट मैनेजमेंट) क्षेत्र में किए गये योगदान के लिए सम्मानित किया गया। संजय भार्गव, क्षेत्रीय प्रमुख-हडको, देहरादूनने विशाल के. कुमार, सीईओ, वेस्ट वॉरियर्स और जोड़ी अंडरहिल, को-फाउंडर सदस्य, वेस्ट वॉरियर्स ने सम्मानित किया। वेस्ट वॉरियर्स संगठन, हिमालयी क्षेत्र में सोलिड वेस्ट मैनेजमेंट के अंतर्गत गत 10 वर्षों से निरंतर कार्य कर रहा है। वेस्ट वॉरियर्स संगठन (Waste Warriors Organization) ने अपने गठन के 10 वर्ष सफलता पूर्वक पूर्ण होने का आयोजन किया गया। विदित है कि 'हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड (हडको)'द्वारा नगर निगम हल्द्वानी - काठगोदाम, नगर पालिका अल्मोड़ा एवं हाल ही में कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के अंतर्गत नगर निगम देहरादून को सोलिड वेस्ट मैनेजमेंट(एसडब्ल्यूएम) परियोजनाओं में सहयोग प्रदान किया गया है।

पब्लिक रिलेशन सोसाइटी ऑफ इंडिया द्वारा निदेशक(कॉर्पोरेट प्लानिंग) को किया सम्मानित

श्री अमित पोखरियाल, अध्यक्ष, पब्लिक रिलेशन सोसाइटी ऑफ इंडिया (देहरादून चैप्टर) के साथ श्री अनिल कुमार सती, सोसाइटी के सचिव ने भी श्री एम. नागराज, निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग), हडको से मुलाकात की तथा जनसंपर्क, सोशल मीडिया और कॉर्पोरेट संचार में हडको के योगदान के लिए उन्हें सम्मानित किया।

किफायती आवास – चुनौतियों और अवसरों हेतु हडको सम्मानित।

निदेशक (कॉर्पोरेटप्लानिंग) का देहरादून दौरा

निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग) का स्वागत व बैठक

दिनांक 14 मई, 2022 को निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग) ने देहरादून क्षेत्रीय की परिचालन गतिविधियों की समीक्षा करते हुए सराहना की तथा सभी कर्मचारियों के प्रश्नों एवं सुझाव को सुना और उनके जबाब दिए। उन्होंने यह भी आग्रह किया कि देहरादून क्षेत्रीय कार्यालय के प्रयासों को व्यवसाय को बढ़ाने के लिए और अधिक प्रयास किए जाने हैं।

श्रीएम. नागराज, निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग), महोदय का देहरादून में स्वागत।

समीक्षा बैठक

निदेशक (कॉर्पोरेटप्लानिंग) द्वारा देहरादून क्षेत्रीय कार्यालय की परिचालन गतिविधियों की समीक्षा की, जिसमें उन्होंने हडको कर्मियों से वार्ता की एवं हडको व्यवसाय वृद्धि पर सुझाव दिए।

शीर्षस्थ बैठकों का विवरण

माननीय मुख्यमंत्री महोदय से बैठक

श्री एम नागराज, निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग),हडको द्वारा दिनांक14-15 अक्टूबर, 2022 के अपने देहरादून प्रवास में दिनांक 15.10.2022 को माननीय मुख्यमंत्री महोदय, उत्तराखण्ड सरकार के साथ बैठक की और उन्हें उत्तराखंड में हडको की गतिविधियों से अवगत कराते हुए हडको द्वारा राज्य के विकास में गति देने हेतु विकास योजनाओं में हडको का सहयोग का प्रस्ताव खारिज में राज्य सरकार की विकास योजनाएं जैसे भूमि अधिग्रहण, शहरी और ग्रामीण आवास, पुलिस आवास, इंफ्रास्ट्रक्चर, पार्किंग, मेट्रो, रिडेवलपमेंट, सड़क विकास व निर्माण, नई टाउनशिप, रेंटल हाउसिंग, भूमि अधिग्रहण आदि विभिन्न विकास परियोजनाओं के लिए हडको ऋण प्रदान कर सकता है।

मुख्य सचिव, उत्तराखंड शासन से बैठक

निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग), श्री एम नागराज ने मुख्य सचिव, डॉ. एस एस संधू, आईएएस-1988, उत्तराखंड सरकार के साथ बैठक कर उत्तराखंड राज्य में हडको की गतिविधियों से अवगत कराते हुए हडको द्वारा राज्य के विकास में गति देने हेतु विकास योजनाओं मे हडको का सहयोग का प्रस्ताव खारिज में राज्य सरकार की विकास योजनाएं जैसे भूमि अधिग्रहण, शहरी और ग्रामीण आवास, पुलिस आवास, इंफ्रास्ट्रक्चर, पार्किंग, मेट्रो, रिडेवलपमेंट, सड़क विकास व निर्माण, नईटा उनशिप, रेंटल हाउसिंग, भूमि अधिग्रहण आदि विभिन्न विकास परियोजनाओं के लिए हडको ऋण प्रदान कर सकता है।

पुलिस महानिदेशक से बैठक

उत्तराखण्ड पुलिस महानिदेशक, श्री अशोक कुमार, आईपीएस, (बैच आरआर-1989) के साथ बैठक कर उत्तराखंड राज्य में पुलिस कर्मचारी आवास और बुनियादी ढांचा संबंधी परियोजनाओं जैसे कार्यालय भवन/संस्थागत अवसंरचना इत्यादि के विकास व निर्माण राज्य सरकार की गारंटी अथवा बजटीय प्रावधान अंतर्गत वित्त पोषण का प्रस्ताव रखा गया जिसमें पुलिस विभाग के लगभग 250 करोड़ रुपये में 1000 आवासीय इकाइयों (57 वर्ग मीटर के साथ टाइप-II क्वार्टर) आदि का निर्माण कर सकता है।

सचिव (पर्यटन), उत्तराखंड शासन से बैठक

सचिव (पर्यटन), श्री सचिन कुर्वे, आईएएस-2003, उत्तराखंड सरकार के साथ बैठक कर हडको द्वारा राज्य के पर्यटन स्थलों के निर्माण एवं नए पर्यटन स्थल विकसित करने आदि परियोजनाओं के लिए हडको वित्त पोषण का प्रस्ताव रखा गया।

(इन बैठकों में क्षेत्रीय प्रमुख, श्री संजय भार्गव एवं श्री अशोक कुमार लालवानी, संयुक्त महाप्रबंधक (वित्त) उपस्थित रहे।)

अध्यक्ष, नगर पालिका परिषद मसूरी से बैठक

निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग), हडको द्वारा श्री अनुज गुप्ता, अध्यक्ष, नगर पालिका परिषद मसूरी से बैठक की गई जिसमें व्यवसयिक भवनों के निर्माण, पर्यटन आवास गृह, सामुदायिक केंद्रों, मल्टी लेवल पार्किंग स्थलों के निर्माण से नगर पालिका को आत्म निर्भर बनाने का प्रस्ताव रखा गया जिसमें हडको द्वारा सहर्ष तकनीकी परामर्श एवं ऋण के माध्यम से वित्तीय सहयोग करने का प्रस्ताव रखा गया। इस बैठक में क्षेत्रीय प्रमुख, श्री संजय भार्गव उपस्थित रहे।

माननीय राज्यपाल महोदय, उत्तराखण्ड सरकार के साथ बैठक

दिनांक 16.03.2022 को माननीय राज्यपाल महोदय, लेफ्टिनेट जनरल (सेवानिवृत्त) गुरमीत सिंह उत्तराखण्ड सरकार से क्षेत्रीय प्रमुख, श्री संजय भार्गव, हडको क्षेत्रीय कार्यालय देहरादून द्वारा भेंट की गई। जिसमे उत्तराखण्ड राज्य के विकास में हडको द्वारा वित्त पोषित विभिन्न योजनाओं की गतिविधियों पर एक प्रस्तुति दी गई। इसके साथ ही राज्य के विकास में भविष्य में क्रियान्वित की जाने वाली विभिन्न आवास एवं इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं आदि पर हडको वित्त पोषण की सम्भावनाओं से अवगत कराया गया तथा यह भी बताया गया कि हडको भविष्य में के विकास में सक्रिय योगदान देगा। माननीय राज्यपाल द्वारा स्वच्छ भारत अभियान एवं प्लास्टिक वेस्ट के दुष्प्रभाव पर भी विस्तृत चर्चा की गई।

माननीय मंत्री, वित्त, आवास और शहरी विकास, महोदय, उत्तराखण्ड सरकार के साथ बैठक

दिनांक 20.07.2022 को हडको क्षेत्रीय प्रमुख, श्री संजय भार्गव ने माननीय मंत्री, वित्त, आवास और शहरी विकास, उत्तराखंड सरकार, श्री प्रेमचंद अग्रवाल जी से बैठक की और उन्हें उत्तराखंड में हडको की गतिविधियों से अवगत कराया। हडको द्वारा राज्य के विकास में गति देने हेतु विकास योजनाओं में हडको का सहयोग का प्रस्ताव रखा जिस में राज्य सरकार की विकास योजनाएं जैसे भूमि अधिग्रहण, शहरी और ग्रामीण आवास, पार्किंग, मेट्रो, रिडेवलपमेंट, सड़क विकास व निर्माण, नई टाउनशिप, रेंटल हाउसिंग आदि विभिन्न विकास परियोजनाओं के लिए हडको ऋण प्रदान कर सकता है। इस बैठकमें श्री बलराम सिंह चौहान, प्रबंधक (आईटी) एवं श्री विवेक प्रधान, प्रबंधक (परियोजना) भी उपस्थित थे। बैठक के अंत में सभी ने माननीय मंत्री महोदय का धन्यवाद किया।

दिनांक 13.05.2022 को श्री अनुज गुप्ता, अध्यक्ष नगर पालिका मसूरी से क्षेत्रीय प्रमुख के साथ भेंट की तथा देश भर में हडको द्वारा विभिन्न प्रकार की योजना क्रियान्वयन करने का अपना अनुभव सांझा किया तथा हडको वित पोषण के सम्बन्ध में जानकारी दी।

दिनांक 13.05.2022 को श्रीमती स्वाति एस. भदौरिया, प्रबंध निदेशक, गढ़वाल मंडल विकास निगम एवं के साथ भेंट की तथा देश भर में हडको द्वारा विभिन्न प्रकार की योजना क्रियान्वयन करने का अपना अनुभव सांझा किया तथा हडको वित पोषण के सम्बन्ध में जानकारी दी।

दिनांक 12.05.2022 को कार्यकारी निदेशक (परियोजना), डॉ. आलोक कुमार जोशी एवं क्षेत्रीय प्रमुख- देहरादून, श्री संजय भार्गव द्वारा हरिद्वार में नगर आयुक्त, नगर निगम हरिद्वार, श्री दयानंद सरस्वती से मुलाकात कर हडको व्यवसाय के संदर्भ में बैठक की गई।

हडको वित्त पोषित मुख्य परियोजनाओं के फोटोग्राफ

हडको – केएफडब्ल्यू ग्रांट से निर्मित सामुदायिक भवन का लोकार्पण

'हडको'-केएफडब्ल्यू अनुदान से निर्मित सामुदायिक भवन, आदर्श बस्ती, वार्ड न. 8, गुलाब राय मैदान, रुद्रप्रयाग, उत्तराखंड का लोकार्पण दिनांक 12.01.2023 को माननीय गढ़वाल सांसद, श्री तीरथ सिंह रावत, नगर पालिका परिषद रुद्रप्रयाग, अध्यक्ष, श्रीमती गीता झिंक्राण की गरिमामयी उपस्थिति में किया गया। इसमें हडको क्षेत्रीय प्रमुख, संजय भार्गव एवं प्रबंधक (परियोजना) श्री विवेक प्रधान द्वारा प्रतिभागिता की गई।

हडको के सहयोग से रुद्रप्रयाग में निर्मित सामुदायिक भवन का लोकार्पण

रुद्रप्रयाग में आज रुद्रमहोत्सव का शुभारंभ के साथ हडको के सहयोग से निर्मित सामुदायिक भवन का लोकार्पण माननीय सांसद गढ़वाल श्री तीरथ सिंह रावत द्वारा किया गया श्रीमती आशा नौटियाल एवम पालिका अध्यक्षा गीता झिंकवान की गरिमामयी उपस्थिति में किया गया ।इस अवसर पर क्षेत्रीय प्रमुख संजय भार्गव ने अवगत कराया कि हडको द्वारा 2013 केदारनाथ देवापदा में उत्तराखंड में 8 स्थानों पर आदर्श बस्ती एवम आदर्श ग्रामो के निर्माण में हडको - के एफ डब्ल्यू अनुदान स्वीकृत किया था । इसी योजना के अंतर्गत गुलाबराय मैदान में सामुदायिक भवन को निर्मित किया गया था ।इसके साथ ही पांच दिवसीय मेले का शुभारंभ भी किया गया ।

उत्तराखंड में किफायती आवास-चुनौतियां और अवसर कार्यशाला में प्रतिभागिता

माननीय आवास मंत्री, श्री प्रेमचंद अग्रवाल जी का क्षेत्रीय प्रमुख, श्री संजय भार्गव, पुष्पगुच्छ से स्वागत करते हुए।

दिनांक 16.09.2022 को होटल मधूबन, देहरादून में शहरी विकास विभाग, उत्तराखंड शासन एवं पीएचडीसीसी चेम्बर द्वारा आयोजित कार्यशाला जिसका उद्घाटन माननीय मंत्री, आवास, शहरी विकास एवं वित्त, श्री प्रेमचंद अग्रवाल, उत्तराखण्ड सरकार द्वारा किया गया। इस कार्यशाला में सचिव आवास, श्री एस.एन. पांडे, निदेशक शहरी विकास, श्री नवनीत पाण्डे, मुख्य कार्यकारी अधिकारी,उत्तराखण्ड आवास एवं नगर विकास प्राधिकरण (UKHU-DA), श्री पी.सी. दुमका, सचिव-एमडीडीए, SDC फाउंडेशन के अध्यक्ष, श्री अनूप नौटियाल, CBRI रूडकी एवं उत्तराखंड PHDCC के वरिष्ठ अधिकारियों के अतिरिक्त नगर निकाय विकासनगर, दिनेशपुर, लालकुआं के अध्यक्ष व अधिशासी अधिकारियों एवं हडको देहरादून के अधिकारियों ने प्रतिभागिता की। कार्यशाला में विषेशज्ञ चर्चा सत्र में क्षेत्रीय प्रमुख, श्री संजय द्वारा उपस्थित सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को केन्द्र सरकार की हाउसिंग फॉर ऑल मिशन अंतर्गत किफायती आवास योजना Affordable Housing Scheme से संबंधित विस्तृत जानकारी दी तथा इसके साथ ही हडको द्वारा स्वीकृत अन्य राज्यों की किफायती आवास योजनाओं से अवगत कराया। इसके साथ ही राज्य सरकार एवं संस्थाओं/नगर निकायों को इन योजनाओंके क्रियान्वयन व हडको वित्तपोशण के संबंध में विस्तृत जानकारी दी गई।

मेगा प्रदर्शनी में प्रतिभागिता

आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत Rise in Uttarakhand 2022, The Mega Exhibition का आयोजन दिनांक 7 से 9 जुलाई 2022 तक होटल पेसिफिक, देहरादून में किया गया। जिसका उद्धघाटन माननीय मुख्यमंत्री, श्री पुष्कर सिंह धामी, उत्तराखंड सरकार द्वारा किया गया। इस मेगा प्रदर्शनी में देश के 30 से ज्यादा महत्वपूर्ण सस्थानों के साथ राज्य सरकार के विभागों ने भाग लिया। हडको देहरादून द्वारा इस मेगा प्रदर्शनी में मुख्यालय के दिशानिर्देशानुसार प्रतिभागिता की गई। प्रदर्शनी में प्रथम दिवस माननीय मुख्यमंत्री, श्री पुष्कर सिंह धामी, उत्तराखंड सरकार, द्वारा इस प्रदर्शनी का उद्धघाटन किया गया जिसमें केन्द्रीय सामाजिक न्याय एव ंअधिकारिता राज्य मंत्री श्री राम दास अठावले, माननीय सांसद श्री नरेश बंसल, कैबिनेट मंत्री श्री धन सिंह रावत, मेयर देहरादून, श्री सुनील उनियाल (गामा), मेयर ऋषिकेश, श्रीमती अनीता ममगाई आदि उपस्थित थे। माननीय मुख्यमंत्री महोदय एव अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने हडको प्रदर्शनी स्टाल का दौराकर अवलोकन किया। क्षेत्रीय प्रमुख, श्री संजय भार्गव द्वारा माननीय मुख्यमंत्री महोदय का स्वागत किया गया।

द्वितीय दिवस में माननीय वन एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री, श्री सुबोध उनियाल, डीजीपी उत्तराखंड पुलिस, श्री अशोक कुमार, एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा हडको देहरादून प्रदर्शनी स्टाल का दौरा कर अवलोकन किया गया, जिसमें श्री अशोक कुमार लालवानी, संयुक्त महाप्रबंधक(वित्त) एवं श्री शंकर चौधरी, प्रबंधक (विधि) द्वारा माननीय अतिथियों का स्वागत किया गया व हडको से सम्बंधित जानकारी दी गई।

दिनांक 9 जुलाई, 2022 को समापन दिवस पर माननीय मंत्री, समाज कल्याण, उत्तराखंड सरकार, श्रीमती रेखा आर्य जी एवं माननीय सांसद, श्री नरेश बंसल जी द्वारा हडको स्टाल/प्रदर्शनी का दौरा कर अवलोकन किया गया। हडको के प्रबंधक परियोजना श्री विवेक प्रधान द्वारा हडको योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी गई, इसमें स्कूल के छात्रों ने भी विशेष रुचि दिखाई। हडको देहरादून के स्टॉल पर पीआरएसआई देहरादून के प्रतिनिधी मंडल द्वारा HUDCO exhibition का अवलोकन किया गया तथा समापन दिवस पर उत्तराखंड सरकार के माननीय कैबिनेट मंत्री पर्यटन और पीडब्ल्यूडी श्री सतपाल महाराज जी और माननीय मंत्री श्री सौरभ बहुगुणा जी ने भी हडको स्टाल का दौरा किया। माननीय सांसद श्री नरेश बंसलजी ने उत्तराखंड की विकास गतिविधियों को सहयोग देने में हडको के प्रयासों की सराहना की।

आजादी का अमृत महोत्सव के इस प्रदर्शनी में 10,000 से ज्यादा छात्रों एवं नागरिकों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

कार्यक्रम में सफल प्रतिभागिता हेतु हडको क्षेत्रीय कार्यलय, देहरादून को माननीय कैबिनेट मंत्री पर्यटन और पीडब्ल्यूडी मंत्री सतपाल महाराज द्वारा मेयर, मंत्री महोदय एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में सम्मानित किया गया।

सतर्कता जागरुकता सप्ताह का आयोजन

क्षेत्रीय कार्यालय में सतर्कता जागरुकता सप्ताह का आयोजन दिनांक 31.10.2022 को अखंडता प्रतिज्ञा और राष्ट्रीय एकता दिवस प्रतिज्ञा के साथ हडको मुख्यालय कार्यालय द्वारा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से शुरू किया गया। क्षेत्रीय प्रमुख, संजय भार्गव ने सार्वजनिक जीवन में सतर्कता के विभिन्न पहलुओं और भ्रष्टाचार को रोकने के लिए सतर्कता के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने भ्रष्टाचार से संबंधित विभिन्न मुद्दों और हमारे देश के विकास पर इसके प्रभाव पर भी प्रकाश डाला और इस बात पर जोर दिया कि सार्वजनिक जीवन में काम और जिम्मेदारी के प्रति व्यक्ति की ईमानदारी भ्रष्टाचार को खत्म करने में मदद करेगी। दिनांक 31 अक्टूबर से 4 नवंबर, 2022 तक सतर्कता जागरुकता सप्ताह के अवसर पर विभिन्न गतिविधियां आयोजित की गई जैसे निबंध, चित्र अभिव्यक्ति, आशु भाषण प्रतियोगिता एवं 'भ्रष्टाचार मुक्त भारत' के लिए स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया तथा सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने केन्द्रीय सतर्कता आयोग की वेबासाइट से अपने नाम के प्रतिज्ञा प्रमाणपत्र निकाले। दिनांक 03.11.2022 को मुख्य अतिथि श्री मनीष पाराशर, भारतीय रिजर्व बैंक के लोकपाल को व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया गया। अतिथि द्वारा 'निवारक सतर्कता' पर व्याख्यान दिया तथा सतर्कता के नियमों और प्रक्रियाओं पर विस्तृत जानकारी दी साथ ही संगठनों के प्रत्येक कर्मचारी द्वारा परियोजना ऋण के मूल्यांकन, ऋण के वितरण के लिए स्थल/साइटों के निरीक्षण आदि जैसे अपने आधिकारिक व्यवहारों में सतर्क रहने की प्रतिबद्धता पर जोर दिया तथा अंत में प्रतियोगिता में विजेताओं को सम्मानित किया गया।

हडको क्षेत्रीय कार्यालय में आर बी आई लोकपाल द्वारा निवारक सतर्कता के ऊपर सत्र

देहरादून। हडको देहरादून क्षेत्रीय कार्यालय में दिनांक 31अक्टूबर से 6 नवंबर 2022 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह के आयोजन किया जा रहा है। निवारक सतर्कता सत्र पर मुख्य अतिथि भारतीय रिजर्व बैंक लोकपाल मनीष पराशर को आमंत्रित किया गया। जिसमे उनके द्वारा वित्तीय संस्थानों को सीवीसी, एवम रेगुलेटरी अथॉरिटी के मार्गदर्शिका को मुलंकन प्रणाली में लागू करने का का आह्वान किया गया। इस अवसर पर क्षेत्रीय प्रमुख संजय भार्गव ने अवगत कराया की सतर्कता जागरूकता के साथ साथ विभिन्न प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है जिसके अंतर्गत आशुभाषण, स्लोगन, दिए गए चित्र से शीर्षक व लेख, निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। क्षेत्रीय प्रमुख, श्री संजय भार्गव द्वारा चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता के विजेताओं की भी घोषणा की गई। श्री अशोक लालवानी प्रथम, वैशाली द्वितीय एवं श्री शंकर चौधरी एवम धर्मानंद भट्ट संयुक्त रूप तृतीय स्थान पर रहे। पराशर द्वारा अपने लंबे बैंकिंग अनुभव में सतर्कता संबंधी अपने अनुभव सांझा किए। कार्यक्रम का समापन नोडल अधिकारी सतर्कता विवेक प्रधान के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

विश्व रक्तदाता दिवस का आयोजन

हडको क्षेत्रीय कार्यालय देहरादून ने 14 जून 2022 को कर्मचारियों के बीच जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया। 2022 विश्व रक्तदाता दिवस की थीम का नारा और थीम रक्त दान करना एकजुटता का कार्य है। प्रयास में शामिल हों और जीवन बचाएं। यह दिन उन भूमिकाओं की ओर ध्यान आकर्षित करने पर केंद्रित है जो स्वैच्छिक रक्तदान जीवन को बचाने और भीतर एक जुटता बढ़ाने में निभाते हैं। हडको क्षेत्रीय कार्यालय देहरादून के कर्मचारियों ने नियमित रूप से रक्तदान करने और समाज में जागरुकता पैदा करने का संकल्प लिया। आयोजन की पृष्ठ भूमि और समाजों के लिए रक्तदान के लाभों की पृष्ठ भूमि देते हुए एक छोटी जागरुकता वार्ता का आयोजन किया गया तथा कार्यालय परिसर में जागरुकता हेतु इसके पोस्टर भी लगाये गए।

आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत वृक्षारोपण

आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत मानसून से पहले वृक्षा रोपण अभियान की शुरुआत करते हुए दिनांक 12.06.2022 को हडको, क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून के सौजन्य से ईको ग्रुप देहरादून के समन्वय से 12 पेड़ों जैसे पिलखन, पनाश, कनेर, जामुन इत्यादि का सर्वे एस्टेट, हाथी बड़कला, देहरादून में रोपण किया गया। इस वृक्षारोपण मुहिम को आजादी अमृत महोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत हडको द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम कराया गया। इस कार्यक्रम में उप सर्वेयर जनरल डॉ. यू.एन. मिश्रा एवम् उनकी पत्नी अनिता मिश्रा, हडको देहरादून से क्षेत्रीय प्रमुख संजय भार्गव, एवं समस्त कर्मियों की सहभागिता रही।

एक अण्डे का स्वागत गान

डॉ. जितेन ठाकुर
(वरिष्ट साहित्यकार)

लड़के ने प्लासटिक की पतली सफेद तांत से बुना हुआ बोरा उठाया हुआ था। लड़के की उम्र सात-आठ साल से ज्यादा नहीं थी और बोरा उसके दुबले-पतले छोटे से कद की तुलना में कहीं ज्यादा लम्बा था। वह कांधे से ढ़लक-ढ़लक जाते बोरे को बार-बार खींच कर संतुलन बनाने की कोशिश कर रहा था। लड़के के काले जिस्म पर कुछ वैसे ही बदरंग और बेतरतीब कपड़े थे जैसे किसी भी कूड़ा बीनने वाले दूसरे लड़के के जिस्म पर हो सकते हैं। बोरा लगभग खाली था और पिचका हुआ था। अभी सुबह की शुरुआत थी और बोरा भरने के लिए अभी पूरा दिन बाकी था। शायद इसीलिए लड़का जल्दी में नहीं था। लड़का चाय की एक दुकान के सामने इत्मिनान से खड़ा हुआ, लोहे की तारों से बनाई गई उस टोकरी को हसरत भरी नजरों से देख रहा था, जिससे झांकते हुए सफेद अण्डों का सिलसिला, करीने से कुछ इस तरह जमाया गया था कि वह बरबस ही रह गुजर की नजर खींच लेता।

क्या चाहिए? दुकानदार ने सड़क पर देर से खड़े हुए लड़के को हंस कर पूछा अण्डा।

लड़के ने बेझिझक उत्तर दिया

पैसे हैं? उसने फिर पूछा

नहीं। लड़के ने मासूमियत से सिर हिलाया

तो भाग फिर। अब दुकानदार ने डपटा

लड़का उदास हो गया और जाने को मुड़ा, पर तभी दुकानदार ने उसे पुकार कर रोक लिया। दुकानदार ने टोकरी से एक अंडा निकालकर उसकी छोटी सी हथेली को भर दिया। लड़के की आँखे चमकने लगीं।

दरअसल दुकानदार को पंडितों से नफरत थी और वह उन्हें ठग समझता था। इसके विपरीत उसकी पत्नी पंडितों पर बहुत विश्वास करती थी। वह अक्सर पति पर दबाव बनाती कि वह सोमवार को सफेद चीज का दान दे और बृहस्पतिवार को पीली चीज दान करे। पत्नी का मानना था कि पंडितों ने उसका पत्रा बांच कर ही, ग्रहों के बुरे प्रभाव को कम करने के लिए यह उपाए सुझाए थे। इससे रोजगार में बढ़ोत्तरी होना तय था। आज सोमवार था और वह पत्नी से बिना झूठ बोले यह कह सकता था कि उसने अण्डा दान करके सफेद और पीली वस्तु एक साथ दान में दे दी है। इस तरह पंडितों का मजाक उड़ाने और पत्नी को चिढ़ाने का एक बेहतरीन मौका उसके हाथ आ गया था।

बहरहाल, कूड़ा बीनने वाला वह छोटा सा लड़का बेहद खुशी और हिफाज़त के साथ अण्डे को हथेली में दबाए हुए कूड़े के ढ़ोल से घुस गया। पर अब समस्या अण्डे को कहीं रखने की थी। क्योंकि एक हाथ से झोला पकड़ कर ही दूसरे हाथ से काम की चीजें बीन कर उसमें डाली जा सकती थीं। पर हाथ में अण्डे रहते हुए यह सबकर पाना मुमकिन नहीं था। लिहाजा लड़के ने अण्डा लोहे के कूड़े वाले ढोल के चौड़े किनारों पर इस तरह टिका दिया कि वह लुढ़क न पाए। इतना करके वह अभी कचरे पर झुका ही था कि काफी देर से उसके पीछे-पीछे आता हुआ कुत्ता कूद कर ढोल पर चढ़ गया और अण्डे को सूंघने लगा। लड़के की सांस अटक गई। उसे लगा कि अभी अण्डा गिरकर फूट जाएगा। उसने बिजली की तेजी से झपटकर अण्डा उठा लिया और कूद कर ढ़ोल से बाहर आ गया। अलबत्ता, कुत्ता वहीं उसी ढोल पर कुछ सूंघता हुआ खड़ा रहा।

लड़का अब अण्डे की सुरक्षा के प्रति अतिरिक्त सतर्क हो गया था।

जब से शहर की साफ-सफाई का ठेका किसी कम्पनी को दिया गया था-शहर में कूड़े के ढोल बहुत कम हो गए थे। कम्पनी के कारिंदे घर-घर से कूड़ा उठाते और उसमें से काम की चीजें बीन कर कबाड़ी को बेच देते। इस कारण लड़के के लिए संघर्ष बढ़ गया था। अब उसे कूड़े की खोज में दूर-दूर जाना पड़ता और वह सारे दिन में बा-मुश्किल दस-बीस रुपए ही कमा

पाता। टोकरियों में लटकते हुए सफेद अण्डे उसे लुभाते थे, वह उन्हें खरीदना चाहता था, खाना चाहता था। पर माँ समझी कि अण्डे की कीमत में डिबरी भर तेल खरीदा जा सकता है जिससे कुछ रातें उजियारी हो सकती हैं। वह मन मसोस कर रह जाता। पर आज तो उसे मुफ्त में अण्डा मिल गया था और वह खुश था, इतना खुश कि अण्डे को चूम रहा था और बार-बार उसे अपने गालों से छुवा कर उसकी ठंडक महसूस कर रहा था। अपने छोटे-छोटे कदमों से लम्बे रास्ते को नाप कर लड़का अब जहाँ पहुँचा था वह कूड़े से भरा हुआ एक खुला प्लाट था। उसने आस-पास देखा। वहाँ कोई कुत्ता नहीं था। उसने अण्डे को हौले से एक ईंट पर रख दिया और ताजे फैंके गए कूड़े को कुरेदने लगा। कूड़े को कुरेदते हुए अभी उसे कुछ हासिल नहीं हो पाया था कि उसने अपने ऊपर किसी साए को अनुभव किया और चौंक गया। उसने गर्दन उठाकर आकाश की तरफ देखा। एक चील उसके ऊपर से होती हुई निकल गई थी। उसने पक्षियों की किताबें तो नहीं पढ़ी थीं पर इतना जानता था कि चील की नजर बहुत तेज होती है। उसके मन में शक पैदा हुआ कि हो न हो चील की नियत अण्डे पर डोल गई हो। वह कुछ देर आसमान की तरफ देखता रहा। उसने देखा कि एक चक्कर लेकर चील वापिस लौट रही है। जहाज की तरह बिना पंख फड़फड़ाए हुए नीचे की तरफ झुकती हुई। उसने झट से छलांगे लगा कर अण्डा उठा लिया और चल पड़ा। चील फिर ऊपर उठने लगी थी।

लड़के को कूड़े के नए ढ़ोल तक पहुंचने के लिए फिर एक लम्बी दूरी नापनी पड़ी। ढोल के पास पहुंचकर उसने दूर तक जाती सड़क को देखा-कहीं कोई कुत्ता नहीं था। फिर देर तक आसमान को देखता रहा, चील, कऊआ या कोई भी परिंदा आसमान में नहीं उड़ रहा था। अलबत्ता छोटी-छोटी चिड़ियों के झुंड यहां-वहां उड़ते हुए चहक रहे थे-फुदक रहे थे। वह निश्चिंत हो गया। यहां अण्डे को कोई खतरा नहीं था। कूड़े से भरे हुए गहरे ढोल में घुसने के लिए लड़का अभी ईंट पर चढ़ा ही था कि उसका कलेजा मुंह को आ गया। ढोल के अंधेरे में झुक कर कबाड़ बीनता हुआ एक तगड़ा लड़का अचानक सीधा खड़ा हो गया था और अब दिखलाई देने लगा था। यह लड़का कई बार उसे पीट कर उससे कबाड़ छीन चुका था। तय था कि आज वह अण्डा छीन ही लेगा। लड़के ने बिना समय गंवाए हुए छलांग लगाई और सड़क पर अपनी पूरी ताकत से दौड़ पड़ा। वह जल्दी से जल्दी आने वाली मुसीबत की जद से बाहर निकल जाना चाहता था।

लड़के को कूड़े के नए ढ़ोल तक पहुंचने के लिए फिर एक लम्बी दूरी नापनी पड़ी। ढोल के पास पहुंचकर उसने दूर तक जाती सड़क को देखा-कहीं कोई कुत्ता नहीं था। फिर देर तक आसमान को देखता रहा, चील, कऊआ या कोई भी परिंदा आसमान में नहीं उड़ रहा था। अलबत्ता छोटी-छोटी चिड़ियों के झुंड यहां-वहां उड़ते हुए चहक रहे थे-फुदक रहे थे। वह निश्चिंत हो गया। यहां अण्डे को कोई खतरा नहीं था। कूड़े से भरे हुए गहरे ढोल में घुसने के लिए लड़का अभी ईंट पर चढ़ा ही था कि उसका कलेजा मुंह को आ गया। ढोल के अंधेरे में झुक कर कबाड़ बीनता हुआ एक तगड़ा लड़का अचानक सीधा खड़ा हो गया था और अब दिखलाई देने लगा था। यह लड़का कई बार उसे पीट कर उससे कबाड़ छीन चुका था। तय था कि आज वह अण्डा छीन ही लेगा। लड़के ने बिना समय गंवाए हुए छलांग लगाई और सड़क पर अपनी पूरी ताकत से दौड़ पड़ा। वह जल्दी से जल्दी आने वाली मुसीबत की जद से बाहर निकल जाना चाहता था।

लड़का फिर रास्ते में कहीं नहीं रुका। जब वह पेड़ों से बांधे गए काले तिरपाल वाले अपने सिकुड़े हुए घर में पहुंचा तो बुरी तरह हांफ रहा था। बदन पसीने से तर था जिस कारण कमीज का कपड़ा चिपचिपाने लगा था। थकान से टांगें कांप रही थीं। वह अपनी जिंदगी में इतना कभी नहीं भागा था। इसके बावजूद वह खुश था कि उसने अण्डे को लुटने से बचा लिया था ।

क्या हुआ? आज कुछ नहीं मिला क्या? ईंटों के चूल्हे पर रोटी सेंकती हुई माँ ने उसके खाली झोले के देख कर पूछा मिला ये अण्डा! मुफ्त! उसने सांस को किसी तरह काबू करके उत्तर दिया। उसे कमाई न होने का कोई मलाल नहीं था। वह जानता था कि वह दस-बीस रुपए कमा भी लेता तो उनसे अण्डा खरीदने की इजाजत हरगिज न मिलती।

उसकी छोटी सी हथेली के ठीक बीच में रखा हुआ झक्क सफेद अण्डा चमक रहा था। माँ ने उसकी आँखों की चमक देखी और अण्डा उठाते हुए कुछ नहीं बोली। माँ को लगा कि वह आज की कमाई अण्डे पर उड़ा आया है, पर अब तो अण्डा खरीदा जा चुका था, इसलिए कुछ भी कहने का कोई फायदा नहीं था। अलबत्ता छोटी ने अण्डे की खुशी में पहले भाई से लिपट कर उसे प्यार किया और फिर उछल-उछल कर चिल्लाने लगी। वह अण्डे के लिए कोई गाना गा रही थी जो किसी को भी समझ नहीं आ रहा था। माँ ने अण्डा गर्म राख में दबा दिया।

लड़का तिरपाल के नीचे बिछी हुई दरी पर लेट गया और लम्बी-लम्बी सांसे भरकर थकान कम करने की कोशिश करने लगा। उसने हसरत के साथ आग के भरे चूल्हे की उस राख को देखा जिसके नीचे दबा हुआ अण्डा सिक रहा था ।

माँ हम अण्डा कब खाएंगें? छोटी उतावली हो रही थी।

जब बाबा आ जाएंगें? माँ ने रोटी तवे पर डालते हुए कहा।

संतोष से भरे हुए लड़के को लगा कि कुछ देर बाद जब यह अण्डा सिक कर राख से बाहर निकलेगा तो पूरा घरा जश्न के माहोल में डूब जाएगा। लड़के की खुली हुई आँखों में अचानक, सिके हुए अण्डों से भरा हुआ बोरा समाने लगा । उसने देखा कि बोरे से निकल कर अण्डों की जर्दी रूई के नर्म फोहों की तरह उड़ने लगी है। जर्दी के उन गोल-गोल पीले बादलों में तैरते हुए लड़के ने बहन के उगते हुए नन्हें पंखों को देखा। उसने देखा कि पिता ने खांसना बंद कर दिया है और माँ चिड़चिड़ा नहीं रही है। अल्यूमीनियम की थाली बड़े-बड़े सफेद अंडों से भरी हुई है और आसमान में चील भी नहीं है। सड़क पर न तो कुत्ता है औन न ही मोटा लड़का। अलबत्ता, चिड़ियां गा रही है।

उबा देने वाले मनहूस काले तिरपाल के नीचे ऐसा खुशनुमा माहोल उसने पहले कभी अनुभव नहीं किया था।

-मुकेश नौटियाल

प्रेम-गली मनभावनी

प्रेम की सबसे मार्मिक कहानियां विद्वेषपूर्ण परिवेश में लिखी गई हैं। युद्धरत इलाकों, विपन्न अंचलों और प्रतिबंधों से जूझते क्षेत्रों से प्रेम के अद्भुत आख्यान फूटे हैं। दरअसल प्रेम की तासीर का ठीक ठीक एहसास तभी होता है जब हम नफरतों से भरे वातावरण में जी रहे होते हैं। इतिहास साक्षी है कि तानाशाहों के फरमानो के बावजूद शिल्पीयों ने पत्थरों को तराश कर प्रेमी युगलों की जीवंत कृतियों को ढाला है। भारतीय परिदृश्य में प्रेम एक स्वाभाविक तत्व के रूप में मौजूद रहा है। हमारे ग्रंथों में ऐसे तमाम आख्यान दर्ज हैं जो प्रेम को हमारे समाज की सांस्कृतिक पहचान बताते हैं। कालांतर में प्रेम को कुछ धार्मिक आवरणों से ढकने की चेष्टा जरूर की गई लेकिन मलिक मोहम्मद जायसी और मीरा को प्रकट होने से फिर भी कोई नहीं रोक पाया।

अंग्रेज़ी में उपलब्ध साहित्य इस बात का गवाह है कि कंपकंपाते यूरोप में भी मनुष्यता को अंततः प्रेम के ताप ने ही जीवित रखा। दरअसल यह मनुष्य जाति की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि वह प्रेम करती है और संवेदना की अतल गहराइयों तक प्रेम में उतरती है। प्रेम कोई संकीर्ण एहसास नहीं है। इसका फलक बहुत व्यापक है, शायद इतना व्यापक कि नापा भी न जा सके। गड़बड़ तब होती है जब प्रेम को केवल यौनिक और दैहिक परिधि तक सीमित कर दिया जाता है। ऐसे में नैतिकता के स्वयंभू ठेकेदार सक्रिय हो जाते हैं और साहित्य, संगीत, कला की गति बाधित होती है। तालिबान और इस्लामिक स्टेट के आतंकियों ने संगीत, नृत्य, मूर्तिशिल्प और गायन पर इसी आधार पर प्रतिबंध लगाया। फलस्वरूप कला की वह उर्वर ज़मीन रेगिस्तान बन गई।

हिंदी साहित्य में अमृता और इमरोज का प्रेमाख्यान शानदार उदाहरण है यह समझने के लिए कि केवल दैहिक आकर्षण ही प्रेम की उपज की वजह नहीं होता। मां का पुत्र के प्रति, पुत्र का माता पिता के प्रति, मित्र का मित्र के प्रति और मनुष्य का मनुष्य मात्र के प्रति प्रेम भी उसी दरिया का हिस्सा है जिसकी एक लहर प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम है। बावजूद इसके अधिसंख्य या यूं समझिए कि अस्सी फीसदी प्रेम कविताएं प्रेमी युगलों को समर्पित हैं। यही हाल कहानियों का भी है। प्रेम के बाकी स्वरूपों के अंश साहित्य में दर्ज़ होने अभी शेष हैं। भारत में कृष्ण-राधा प्रसंग और उद्धव- गोपी संवाद इस बात के प्रमाण हैं कि एक कालखंड में भारतीय समाज में प्रेम-व्यवहार जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा था। इंग्लिश, रोमन, फ्रेंच और जर्मन क्लासिक साहित्य भी कुछ इसी तरह का वातावरण निर्मित करता है। सत्तर हज़ार साल पहले सभ्यता रचने की शुरुआत करने वाला सेपियंस आज उत्तर आधुनिक काल में अगर ग्रहों को छूने की सामर्थ्य हासिल कर पाया है तो केवल इस वजह से कि प्रेम ने उसको परिवार और समाज बसाने के लिए प्रेरित किया। अन्यथा सेपियंस के साथ ही नियेंडरथल भी इस धरा पर व्यापक रूप में विचरते थे। मानव विज्ञानी बताते हैं कि नियेंडरथल अपने पशुत्व को नहीं बदल सके फल स्वरूप गायब हो गए। सेपियंस ने आपसी संबंधों को जोड़ना शुरू किया। परिवार एक इकाई बना, परिवार से समाज बना और समाज से अंततः एक पूरी मानव-सभ्यता विकसित हुई। मनुष्य की प्रेम कथाओं ने भाषाओं को भी गति दी है। हमारे समय की कुछ भाषाएं तो प्रेम की प्रभाव में घुली मिली नजर आती हैं। हिंदुस्तानी यानी उर्दू की शायरी उसकी जान है जो मोहब्बत की तासीर को प्रामाणिकता से व्यक्त करने के लिए जानी जाती है। यहां तक की ईश्वर तक पहुंचने का मार्ग भी यहां प्रेम को ही बताया गया है। सूफियों की सूक्तियां प्रेमगली को परमात्मा तक पहुंचने का साधन बताती हैं। सदियों तक शक्ति और धन के प्यासे राजा लड़ते रहे। युद्धों के रक्त रंजित इतिहास से हमारी किताबें भरी पड़ी हैं। बावजूद इसके प्रेम का बीज अंकुराते रहे। यही वजह है कि मनुष्यता जिंदा रही। इस दौर में भी जब चारों तरफ युद्ध के उद्घोष किए जा रहे हैं तब मनुष्यता को प्रेम ही बचाए रखे हुए है। प्रेम की अनवरत धारा ने हमको ज़्यादा सभ्य, ज़्यादा संवेदनशील बनाया है। विश्वभर में तमाम कल्याणकारी संस्थाएं लोगों से चंदा एकत्र कर स्वास्थ्य, शिक्षा और अन्य सामाजिक सरोकारों की दिशा में अद्भुत कार्य कर रही हैं। यह एक मनुष्य का दूसरे मनुष्य के प्रति प्रेम ही तो है! हिंदी साहित्य में अद्भुत प्रेम कविताएं, कहानियां और उपन्यास मौजूद हैं। इस तकनीकी युग में जब नई पीढ़ी प्रकृति से दूर एक कृत्रिम दुनिया में जीने को अभिशप्त हो गई है तब प्रेम की पौध को बचाए रखना और बड़ी चुनौती हो गई है। इस दौर में साहित्य को न केवल अपनी समझ बदलनी होगी बल्कि कथ्य और शिल्प के स्तर पर भी कुछ नए तरह के प्रयोग करने होंगे। अंग्रेज़ी में यह शुरुआत हो चुकी है। वहां से एक दृष्टि हासिल की जा सकती है। इस दौर में 'तीसरी कसम' जैसी फिल्म और 'उसने कहा था' जैसी कहानी देखी-पढ़ी जाएगी लेकिन औद्योगिक क्रांति और बाजारवाद ने नई पीढ़ी को एक नया परिवेश दिया है। यह परिस्थिति जन्य प्रभाव है। इस परिवेश में प्रेम कहानियां और प्रेम कविताएं अगर पुरानी लीक पर चलते हुए लिखी गई तो नई पीढ़ी के पाठक उससे स्वयं को कनेक्ट नहीं कर पाएंगे। इन दिनों सोशल मीडिया पर नए युग के युवाओं की लिखी कविताएं और कहानियां पढ़िए। आप समझ जाएंगे कि बदली परिस्थितियों में साहित्य की क्या मांग है! उसमें प्रेम कहानियों और प्रेम कविताओं का कलेवर किस मिजाज का होना चाहिए। यह इसलिए भी जरूरी है कि हमारे दौर की बची खुची हिंदी पत्रिकाएं जिस मिजाज की प्रेम कहानियां छाप रही हैं वह शायद नए पाठकों को उतना आकर्षित न कर पाए। युग बदलने के साथ साहित्य को भी बदलना चाहिए और जाहिर है साहित्यकारों को भी।

कविता

जय हो उत्तराखंड, जय हो उत्तराखंड

श्री आलोक तोमर
वरिष्ठ आईटी सलाहकार, उत्तराखण्ड शासन

अल्मोड़ा

ये देखो अल्मोड़ा यहां कितनी सुंदर हरियाली है
सबको है आकर्षित करती धरती ये मतवाली है।
दूर दूर तक दृश्य विहंगम बदरा काली काली है।
सबसे प्यारी नैना देवी झाँकी यहाँ निराली है।

जागेश्वर मंदिर में बजते घंटे सुबह औ शाम जी।
इस मिट्टी को झुककर चूमो शत् शत् करो प्रणाम भी।

जय हो उत्तराखंड, जय हो उत्तराखंड।

बागेश्वर

बागेश्वर को देखो यहाँ कितना सुंदर विस्तार है
सुंदरता में इसकी महिमा चारों ओर अपार है
धरती से आकाश चूमते बाँज बुराँस का प्यार है
सचमुच में ये पावन धरती स्वर्ग का अवतार है

मन को ठंडक मिलती है जब लेते इसका नाम जी,
इस मिट्टी को झुककर चूमो शत् शत् करो प्रणाम भी।

जय हो उत्तराखंड, जय हो उत्तराखंड।

चमोली

चमोली को शोभित करता बद्रीनाथ का धाम है।
गोपेश्वर भी है यहाँ पर हेमकुंड भी साथ है
औली में है बर्फ चमकती सुबह दिन और रात है
फूलों की घाटी का सुंदरता में अद्भुत हाथ है

तपकुंड, विष्णु प्रयाग, पंच प्रयाग है जान जी,
इस मिट्टी को झुककर चूमो शत् शत् करो प्रणाम भी।

जय हो उत्तराखंड, जय हो उत्तराखंड।

चंपावत

चंपावत में बालेश्वर मंदिर ये बड़ा ही प्यारा है
मीठा रीठा साहब यहाँ पर सिखों का गुरुद्वारा है
पंचेश्वर और देवीधुरा ने इस धरती को तारा है
नागनाथ के मंदिर का भी यहाँ पे बड़ा सहारा है

वन्य जीवों से भरे हुए हैं यहाँ के हरे मैदान जी,
इस मिट्टी को झुककर चूमो शत् शत् करो प्रणाम भी।

जय हो उत्तराखंड, जय हो उत्तराखंड।

देहरादून

देखो देहरादून यहाँ की ये ही तो राजधानी है
अंग्रेजों की सत्ता की यहाँ पे कई निशानी हैं
घंटा घर आकाश चूमता आई.एम.ए. पहचानी है
लीची के हैं बाग यहाँ पर और मसूरी रानी है

शिक्षा में भी देहरादून रखता है प्रथम स्थान जी,
इस मिट्टी को झुककर चूमो शत् शत् करो प्रणाम भी।

जय हो उत्तराखंड, जय हो उत्तराखंड।

हरिद्वार

कितना पावन और निराला अपना ये हरिद्वार है
देवलोक से आती सीधी गंगा माँ की धार है
वेदों और पुराणों में भी गाथा बारंबार है
जीवन और मरण का देखो यही आखिरी सार है

इस पावन धरती पर देवों ने भी किया बखान जी,
इस मिट्टी को झुककर चूमो शत् शत् करो प्रणाम भी।

जय हो उत्तराखंड, जय हो उत्तराखंड।

नैनीताल

अद्भुत् सुंदर कितना प्यारा अपना नैनीताल है
चारों ओर यहाँ पर फैला झीलों का जंजाल है
चाइना पीक यहाँ पर चोटी बहुत ही बेमिसाल है
इस धरती को गर्वित करते तल्ली मल्ली ताल है

मृदुभाषी हैं लोग यहाँ के हँसके करें सलाम जी,
इस मिट्टी को झुककर चूमो शत् शत् करो प्रणाम भी।

जय हो उत्तराखंड, जय हो उत्तराखंड।

पौड़ी

पौड़ी जिले की उत्तराखंड में एक अलग पहचान है
नागर्जा का मंदिर इसमें ज्वालपा माँ की शान है
बिंसर महादेव यहाँ है, ताराकुंड भी जान है
सचमुच इसमें रचता बसता उत्तराखंड का प्राण है

लोकगीत संगीत में पौड़ी का है ऊँचा नाम जी,
इस मिट्टी को झुककर चूमो शत् शत् करो प्रणाम भी।

जय हो उत्तराखंड, जय हो उत्तराखंड।

पिथौरागढ़

सीमा की है रक्षा करता पिथौरागढ़ महान है
उल्का देवी मंदिर की भी एक नई पहचान है
राय गुफा भी अद्भुत इसमें, भटकोट स्थान है
हनुमान गढ़ी में जुटती रोज़ भीड़ तमाम है

कई बार बचाई इसने हम लोगों की आन जी,
इस मिट्टी को झुककर चूमो शत् शत् करो प्रणाम भी।

जय हो उत्तराखंड, जय हो उत्तराखंड।

अलकनंदा

अलकनंदा, मंदाकिनी का संगम रुद्र प्रयाग है
कहीं पे शीतल धारा है, कहीं उफनती आग है
अगस्त मुनि की बोली है, केदारनाथ का राग है
गुप्तकाशी है, खिर्सू है, देओरिया, सोन प्रयाग है

यहाँ थकावट को मिलता है अद्भुत एक विराम जी,
इस मिट्टी को झुककर चूमो शत् शत् करो प्रणाम भी।

जय हो उत्तराखंड, जय हो उत्तराखंड।

टिहरी

देखो जिला ये टिहरी का श्रीदेव सुमन से वीर पले
कितने उन पर राजा के बर्छी भाले तीर चले
भूखे रहे 84 दिन तक पर ना उनके नीर चले
1944 में दुनिया से बन कर वे पीर चले

मर कर वो इतिहास बन गए गाथा पूरे ग्राम की
इस मिट्टी को झुककर चूमो शत् शत् करो प्रणाम भी।

जय हो उत्तराखंड, जय हो उत्तराखंड।

उधम सिंह नगर

उधम सिंह नगर की देखो कितनी सुंदर शाम है
चैती मंदिर, गिरी सरोवर, नानक माता धाम है
इतिहास के पन्नों में भी इसका इसका जिक्र आम है
जनरल डायर की हत्या में उधम सिंह का नाम है

उत्तम सादा रहन सहन है सादा खान पान जी
इस मिट्टी को झुककर चूमो शत् शत् करो प्रणाम भी।

जय हो उत्तराखंड, जय हो उत्तराखंड।

उत्तरकाशी

देखो ये उत्तरकाशी कितना सुंदर और उजियारा है
गोमुख नाम से गंगा जी का जल स्रोत ये प्यारा है
चारों ओर हिमालय फैला बड़ा ही भव्य नज़ारा है
ऐसा लगता है इसको देवों ने यहाँ उतारा है

अपना पावन उत्तराखंड रहे हर पल यूँ ही जवान जी
इस मिट्टी को झुककर चूमो शत् शत् करो प्रणाम भी।

जय हो उत्तराखंड, जय हो उत्तराखंड।

==================

भ्रष्टाचार मुक्त भारतः विकसित भारत

रवीन्द्र कुमार
हडको क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून

विकसित भारत का सपना करें साकार।
हर भारतवासी भ्रष्टाचार पर करे प्रहार।।

भ्रष्टाचार से आशय उस बुरे आचरण से है जो कि मनुष्य को प्रलोभन वश उसके सच्चे कर्तव्य निर्वहन में बाधक बनता है। भ्रष्टाचार के कारण सरकारी कार्यालयों में जन साधारण को अपने कार्य करवाने में समय तथा धन दोनों बरबाद करने पड़ते हैं। अगर कोई व्यक्ति आर्थिक तौर पर कमजोर है तो उसका कार्य तो अटका रह जाता है।

भ्रष्टाचार में वर्ष 2021 के आधार पर 180 राष्ट्रों में 85वॉं स्थान है। एशिया के दो राष्ट्र मालदीव एवं जापान भष्ट्राचार से मुक्त है। जबकि अफ्रीकी महाद्वीप का राष्ट्र सोमालिया गरीबी, राजनैतिक अस्थिरता, आतंकवाद के कारणवश भ्रष्टाचार में शीर्ष स्थान पर है। ऐसे में अपना देश भारत जो विकासशील होते हुए विश्व में अपनी विद्वता एवं क्षमता की प्रसिद्धि फैला रहा है, भ्रष्टाचार हमारे लिए घोर अभिशाप है। भ्रष्टाचार की जड़े बहुत गहराई तक फैली हुई हैं। अतः इससे निपटने के लिए सरकार को ज्यादा से ज्यादा अधिकार जनसाधारण को देने चाहिए। साथ ही भ्रष्टाचारियों के लिए कठोर सजा का प्रावधान करना चाहिए।

आज के स्वतंत्र भारत में भी जनसाधारण अपनी शिकायत पुलिस से करने में हिचकता है। इसका मूल कारण भ्रष्टाचार की है क्योकि सीधे साधे मामले में इतने प्रश्न जोड़कर शिकायतकर्ता को ही उल्टे दोषी करार देते हैं। न्यायालयों में लम्बित मामलों का ढेर आज इसका सजीव उदाहरण है। भ्रष्टाचार के कारण जनसाधारण के सम्पर्क वाले कार्यालयों में निम्न स्तर से उच्च स्तर तक कमीशन बंधी होने के कारण जन साधारण की शिकायत नहीं सुनी जाती है और इसके विपरीत उसके कार्य को न होने लायक बना देते हैं। जिससे जन साधारण में डर के कारण चुपचाप उनके अनुसार चलकर अपना कार्य कराना पड़ता है।

भ्रष्टाचार से निपटने हेतु सरकारी एजेंसी कारगर साबित नहीं हो सकी हैं। ऐसे में भ्रष्टाचार से निपटने में लोकपाल की नियुक्ति जनसाधारण के हितार्थ है। जिसमें जन साधारण खुले मन से अपनी शिकायत लोकपाल से बिना हिचकिचाहट कर सकें। भ्रष्टाचार का यदि निदान हो जाए तो भारत विकसित राष्ट्र बनकर विश्व गुरू बनने की क्षमता रखता है। भ्रष्टाचार के निवारण हेतु कठोर कदम उठाने चाहिए जिससे भारतवासियों में वास्तवित विकास का लाभ पहुंच सके। हर भारतवासी गर्व महसूस कर सुख समृद्ध हो। इसके लिए भारत सतर्कता आयोग वर्ष 1999 से ही 'सतर्कता तथा जागरूकता' सप्ताह आयोजित कर देशवासियों को उनके कर्तव्यों पर चलने हेतु प्रयासरत है।

आज भारत विज्ञान, कृषि, रक्षा, दूरसंचार, अंतरिक्ष आदि विभिन्न क्षेत्रों में विश्व के समक्ष चुनौती बनकर खड़ा है तथा पूरा विश्व भारत की ओर आशा भरी नजरों से देख रहा है ऐसे में भ्रष्टाचार भारत के लिए अभिशाप है। अतः इससे मुक्ति नितांत आवश्यक है। इससे पार पाकर भारत अपना वर्चस्व कायम कर विकसित राष्ट्र के रूप में विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में खड़ा कर सकता है।

जौनसार-बावर में 'बूढ़ी दीवाली'

(अनोखी परंपरा)

श्रीमती मंजूला चौहान
पत्नी श्री बलराम सिंह चौहान, प्रबंधक (आईटी)

किसी भी समाज को समझने के लिए उसके इतिहास, भूगोल, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र के बारे मे समझना बहुत आवश्यक होता है। जौनसार बावर उत्तराखण्ड राज्य के देहरादून ज़िले के चकराता, कालसी व त्यूणी तहसील में निवास करती है जो अपनी अनोखी संस्कृति, भेषभूषा, रहन-सहन के लिए प्रसिद्ध है तथा विभिन्न संस्कृति व इतिहास के कारण शोधार्थियों के बीच एक आकर्षण का विषय है। इस क्षेत्र का इतिहास महाभारत काल से जुड़ा है जौनसारी लोगों का ये मानना है, की जब द्वापर युग मे पांडव को एक वर्ष का कारावास दिया गया था, उस गुप्त कारावास मे जौनसार में राज्य कर रहे राजा विराट मे पांडव को अपने राज्य में शरण दी थी जिसके कारण वर्षो से इस क्षेत्र में पांडवो की पूजा की जाती रही है। जिस कारणवश जौनसारी जनजाति के लोग खुद को पांडवो के उपासक मानते आ रहे है जो कि अपनी प्राचीन परम्पराओं के लिए भी जाना जाता है, स्थानीय ग्रामीण कथाओं के अनुसार, टोंस घाटी के नृविज्ञान में पांडवों और कौरवों का चित्रण है और कुछ परिवार इन दोनों कुलों के प्रत्यक्ष वंशज होने का दावा करते हैं। जौनसारी पांडवों के वंशज होने का दावा करते हैं जिनको पाशि कहा जाता है जबकि बावरी लोग कौरवों या दुर्योधन के वंश से करते हैं जिनको षाठी कहा जाता है। जौनसारी जनजाति के बारे में ये कहा जाता है कि यह लोग मूल रूप से महाभारत के पांडवो व राजस्थान के राजपूतो से उत्पन्न है। ये दोनों समुदाय शताब्दियों से विश्व समुदाय से कटे हुए हैं जिसके कारण इनकी अद्वितीय संस्कृति और परम्पराएँ बची हुई हैं। यहां की परंपराएं, रीति रिवाज, वेशभूषा, रहन सहन, बोली भाषा, गीत संगीत, खानपान इस क्षेत्र की लोक संस्कृति को देश दुनिया मे अलग पहचान दिलाने का काम करती है। यहां अनेक स्थलो में प्राचीनतम इतिहास के पगचिन्ह मौजूद हैं। यहां मनायें जाने वाले लोकत्सवों, मेलों की तिथि, समय, स्थान एक विशिष्ट परम्परा के साथ होता है जो आपसी सोहार्द तथा सामाजिक चेतना इनकी मुख्य विषेशता है। स्त्रीयों की अपनी परम्पराओं के प्रति लगाव एवं जागरूकता जौनसारी संस्कृति को सामाजिक चेतना की ओर अग्रसर करती है। नारी सशक्तिकरण के दौर में जौनसार की महिला त्यौहारों, मेंलों, उत्सवों के माध्यम से अपनी संस्कृति, भाशा, लोकगीत एवं परम्पराओं को बदलतें युग के दुश्प्रभावों से बचाने का कार्य कर रही है।

अपनी संस्कृति और परंपरा के लिए प्रसिद्ध जौनसार-बावर, गढ़वाल और उत्तरकाशी तथा टिहरी के पहाड़ी इलाकों में बूढ़ी दीवाली मनाने की परंपरा हमेशा की तरह जीवंत बनी हुई है। यहां वास्तविक दीवाली के एक महीने पष्चात दीवाली मनाने की परंपरा है जिसे पुरानी दीवाली और 'बूढ़ी दीवाली' कहा जाता है। जौनसार-बावर में कुछ वर्षों से कई लोग नियमित दीवाली भी मनाते हैं, लेकिन 'बूढ़ी दीवाली' की बात ही निराली है, इस त्योहार को बड़े ही धूमधाम से 3 से 4 दिनों तक ईको फ्रेंडली दिवाली के रूप में मनाया जाता है। इस पर्व में पटाखों का शोर या फालतू खर्च नहीं

होता है। बाहरी राज्यों और प्रदेशों में काम करने वाले प्रवासी भी पुरानी दीवाली मनाने के लिए लौट आते हैं, लोगों में काफी उत्साह व खुशी का माहौल होता है।

'बूढ़ी दीवाली' मनाने का कारणः महाभारत काल से लेकर 21वीं सदी तक दुनिया कहां से कहां पहुंच गयी, मगर उत्तराखण्ड और हिमाचल प्रदेश के गिरी वार और गिरि पार का एक जनजातीय क्षेत्र ऐसा भी है जो कि अपनी अनूठी संस्कृति के कारण हजारों सालों के अन्तराल के बावजूद हमें अपने अतीत की झलक दिखाता है। क्षेत्रिय मत के अनुसार पहाड़ के सुदूर ग्रामीण इलाकों में श्रीराम के अयोध्या आने की खबर में देरी से मिलने के कारण एक महीने बाद दीवाली मनाई जाती है। अधिकांश लोगों का मत है कि जौनसार-बावर कृषि प्रधान क्षेत्र होने के कारण यहां के लोग खेतीबाड़ी के कामकाज में बहुत ज्यादा व्यस्त रहते हैं जिसके कारण यहां के लोग 'बूढ़ी दीवाली' मनाते हैं।

आमवस्या के दूसरे दिन प्रातः सुरज निकने से पहले बिरूडी(मुख्य दीवाली) होती है जो होलीयात (होली का दहन जैसी पूजा) से होती है, जिसमें भीमल की हरी लम्बी टहनियों पर बियाठी या देवदार की बारीख लकड़ियों को बांध कर मशाल बनाया जाता है तथा चावल हल्दी का टीका सभी के माथे पर लगा कर शुभकामनाएं देते है (बियाठी भीमल की सूखी लकड़ियों को 2-3 महीने पानी में भिगाने के पश्चाम उस का रेशा निकाल दिया जाता यह रेशा रस्सी आदि बनाने के काम आता है तथा जो लकड़ी बचती है उसे बियाठी कहते हैं, यह बियाठी अति ज्वलनशील होती है, बरसात व सर्दियों के मौसम में आग जलाने में काम आती है)। होलीयात स्थान (गांव से बाहर का वह स्थान होता है जहां से आग फेलने का डर नहीं होता) से डोल-दमॉऊ की धूंन पर लोग सामूहिक नृत्य करते हुए पांडव कक्ष (पंचायती प्रांगण) में पहूंचते है। यहां सभी महिला-पुरुष डोल-दमॉऊ की धूंन पर सर्वप्रथम अपने ईष्टदेव महासू महाराज, शिलगूर-बिजट महाराज (देवता) की महिमा को गाया जाता है तत्पश्चात प्रचलित ''हारूलों'' वीरभड़ों के पराक्रम को पूजते, अभिवादन करते हुए उनकी गाथा को गाते हुए एक दूसरे के हरियाली लगाते, सामूहिक नृत्य करते हैं और के अखरोट, चिवडा व मूडा (इसमें कई चीजें होती है जैसे भंगजीरा (Perilla frutescens) खाने वाली भांग के बीज, गेंहू व चावल को स्वादनुसार नमक या गुड़ के साथ उबाला जाता है फिर इसे सूखा कर नमक के साथ भूना जाता है तब मूडा कहलाता है) बांटा जाता है। इस दौरान घरों में तरह-तरह के पकवान बनाए जाते हैं उड़द दाल के पकौड़े, चिलरे, हलवा, लाडू (चावल व आटे से बड़े-बड़े पापड) विभिन्न प्रकार की पूरियां सामान्य पूरी, आलू-मासाला पूरी तथा तिसरी विशेष तरह की पूरी होती है जिसमें अखरोट, भंगजीरा व गुड़ पीस कर भरा जाता है और इसे गर्म घी के साथ परोसा जाता है। इसके साथ ही दिन के समय दारू पीने वाले लोग एक दूसरे के घर जाकर जड़ी-बूटियों व मंडुआ (कोदों) की दारू का सेवन करते हैं।

पहले दिन छोटी दीवाली, दूसरे दिन बिरूडी (मुख्य दीवाली), तीसरे दिन जंदौई मनाई जाती है। इस दिन रात को देवदार के फट्टों का हाथी बनाया जाता है जिसे सजा कर तैयार किया जाता है फिर उस पर ग्राम के मुख्या (स्याणा) को बैठाया जाता है जो गाजे बाजे के साथ नृत्य करता है। इस अंतिम दिन में किसी-किसी गांव में हिरनी भी बनाई जाती है जिसे रंग बिरंगे कपड़ों व सोने चांदी के जेवरों से सजाया जाता है फिर उस पर ग्राम के मुख्या (स्याणा) को बैठाया जाता है तथा हास्य कलाकर भी जुड़े (विशेष ड्रेस) पहन कर गाजे बाजे के साथ नृत्य करते लोकगीतों को गाते हैं तथा लोगों को हंसाते हैं इसके साथ ही दीवाली का समापन होता है।

दम तोड़ती लोक संस्कृतिः जौनसार की अनोखी दीवाली के अनोखे रंग है परन्तु दम तोडती लोक संस्कृति की एक बड़ी विरासत है जो निकट भविष्य में रहने का डर सताने लगा है क्योंकि इस गत वर्ष एवं इस वर्ष जब मैं इस पर्व को मनाने अपने पुश्तैनी गांव गई तो देखा लोग अब बंद कमरों में टीवी नाटकों तक सीमित होते जा रहे हैं और लोग नई दिवाली में तब्दील हो रहे हैं। इस संस्कृति को बचाने हेतु दो दिवसीय राजकीय अवकाश निहित होना चाहिए ताकि सरकारी कर्मीयों व स्कूली बच्चे अपने क्षेत्र में जाकर इस पर्व को बचाने में सफल हो सकते हैं क्योंकि छुट्टी न मिलने से अक्सर युवा व मॉ-बाप इस त्यौहार में धीरे-धीरे लोक संस्कृति ह्रास के लक्षण दिखाई दे रहे हैं, लोग पलायन हो रहे हैं कुछ लोग दूर शहरों में बसने लगे है जिससे एक समय एसा आयेगा कि इस पर्व का वजूद ही मिट जाएगा। इस खूबसूरत संस्कृति में मैंने जो कुछ लिखा है, उससे कहीं अधिक है। मैं आशा करती हूं कि जौनसार-बावर की 'बूढ़ी दीवाली' व प्रचलित अनोखी परंपरा जो षायद आपसे अनभिज्ञ थी उससे भिज्ञ हुए तथा पसंद आया होगा।

जय हिन्द

आजादी का अमृत महोत्सव

जगदीश चन्द्र पाठक

अमृत महोत्सव ने ली अंगड़ाई है
यह तो आजादी की बधाई है
पचहत्तर वर्ष बीते आजादी को
वह यात्रा अब सबको याद दिलायी है।

जैसा कि विदित है कि किसी राष्ट्र का भविष्य तभी उज्जवल होता है जब वो अपने अतीत के अनुभवों एवं विरासत के गर्व से पल-पल जुड़ा रहता है। अपनी इसी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय चेतना के साक्षी बनने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गुजरात के अहमदाबाद स्थित साबरमती आश्रम से स्वतंत्रता मार्च को हरी झंडी दिखाकर आजादी की 75वीं वर्षगांठ को समर्पित 'आजादी के अमृत महोत्सव' कार्य का उद्घाटन किया। आजादी का अमृत महोत्सव 15 अगस्त 2022 से 75 सप्ताह पूर्व शुरू हुआ है और 15 अगस्त 2023 तक चलेगा। आजादी का अमृत महोत्सव स्वाधीनता सेनानियों से प्रेरणा नए विचारों, नए संकल्पों एवं आत्मनिर्भरता का अमृत है। भारत की उपब्धियां आज सिफ भारत की ही नहीं है। अपितु पूरी दुनिया को रोशनी दिखाने वाली है। कोरोना महामारी के संकट में भारत में कम समय में ही कोरोना वैक्सीन का सफलता पूर्वक उत्पादन करके भारत ही नहीं विश्व भर में उपलब्ध कराई है। हमें अपने संविधान, लोकतांत्रिक परंपराओं पर गर्व है। प्रथम स्वाधीनता संग्राम से लेकर भारत की आजादी तक कई महापुरूषों का राष्ट्र को लेकर एक विचार था जिसके लिए उनके द्वारा जीवन का सर्वोच्च बलिदान दिया गया उनके विचारों उनके त्याग को याद करके अपने जीवन में देश के लिए हमें प्रेरणा प्राप्त करनी चाहिए। हर कोई भारतवासी अपने स्वतंत्रता संग्राम के योद्धओं के जीवन से प्रेरणा प्राप्त करके वर्तमान समय में उस विचार का आचरण करके देश को विश्व के शिखर पर पहुंचा सकता है। भारत वासी को लोकतंत्र एवं संविधान के मूल सिद्धांतों को अपने जीवन में अपनाना होगा जिसमें देश में भ्रष्टाचार, आतंकवाद एवं अलगाववाद को सुलझाया जा सकता है। देश निर्माण में मजदूरों, किसानों, कामगारों, देश की प्रतिक्षा संस्थानों का विगत 75 वर्षों में अतुलनीय योगदान रहा है। विगत 75 वर्षों में भारत द्वारा अपने नागरिकों का जीवन स्तर उठाने में ढांचागत क्षेत्रों सूचना प्राद्योगिकी, विज्ञान एवं चिकित्सा क्षेत्रों में कई उपलब्धियां हासिल की गई है। आज सूचना प्राद्योगिकी क्षेत्र में भारतीय वैज्ञानिकों का समूचे विश्व में योगदान है। देश की युवा जनता को हमारे स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के विचारों, बलिदान एवं योगदान से अवगत कराया जाएगा जिसमें की आजादी का अमृत संपूर्ण जनता तक पहुंचे एवं प्रत्येक नागरिक देश निर्माण में योगदान पूरी निष्ठा के साथ करेगा।

अनसुना शोर

आरुषि लालवानी
पुत्री श्री अशोक कुमार लालवानी
संयुक्त महाप्रबंधक (वित्त)

भीड़ के बीच है रहता, फिर भी बहुत अकेला है इंसान।
सुख दुख अपने किसे बताऊं, यही सोच कर है परेशान।।

कहने को तो घर है घर में हैं सब परिवारवाले भी साथ।
फिर भी असमंजस है किससे बांटू अपने दिल की बात।।

यही जीवन है एक रेस हर व्यक्ति रहा है दौड़।
सबको पछाड़ के अव्वल आना इसकी लगी है होड़।।

प्रतिस्पर्धा में कहीं पिछड़ न जाएं, सबको डर ये सताता है।
रिश्तों की कमाई भूल गया, मानव अब पैसे कमाता है।।

धन तो खूब कमाया, फिर भी लालसा उसकी और है।
ऊपर से है शांत मन में भरा अनसुना शोर है।।

पहाड़ की पीड़ा

धर्मानंद भट्ट
ए.एफ (एस.जी.)

20 साल का उत्तराखण्ड, कुछ इस तरह बीत गया।
सत्ता की दौड़ में कभी कमल, तो कभी हाथ जीत गया।।
महफूज थे जो खेत खलियान, उन सबको वंजर कर गया।
पुश्तैनी मकानों की नीव को, पलायन से जर्जर कर गया।।
पहाड़ों की रौनक और खुशियां, गांव को सुना कर गया।
विकास भी पहाड़ों में आने से, घरातल भी सचमुच डर गया।।
राज्य बनाया जिस मकसद से, वह सपनों में ही रह गया।
विकास की दौड़ में पहाड़ों का पलायन बेचार जीत गया।।

चेहरा एक, रूप अनेक, अवसरवाद की राजनीति

अशोक कुमार लालवानी
संयुक्त महाप्रबंधक (वित)

आज का युग राजनीति के अवसरवाद का युग है। आज के राजनीतिकज्ञ राष्ट्र की सेवा भाव से नहीं बल्कि स्वयं के निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए राजनीति में आते हैं। जनता के बीच लोक लुभावने वायदे कर अगले 5 वर्षो हेतु वोटर जनादेश प्राप्त करना आज के राजनीतिज्ञों की एक प्रमुख रणनीति है। इस रणनीति के अंतर्गत वे स्थानीय मुद्दों को आधार बनाकर भोली भाली जनता को बेवकूफ बनाते हैं, जहां युवा वोटरों को नौकरी और रोजगार का वायदा किया जाता है वहीं बुजुर्गों को वृद्धावस्था पेंशन के वायदे किए जाते हैं। यदि कोई दूसरी पार्टी सत्ता में रही है तो उसके नकारात्मक पहलू उजागर कर जनता को बरगलाया जाता है। कहने का सार यही है कि आज की राजनीति में चेहरे पे चेहरा लगाकर साम, दाम, दण्ड सभी उपाय अपनाए जाते हैं न कि राष्ट्र सेवा बल्कि स्वयं की स्वार्थ सिद्ध हेतु सत्ता पर काबिज होने के लिए। जब राष्ट्र का नेतृत्व ऐसा होगा तो राष्ट्र प्रगति की दिशा में बिछड़ जाएगा और यह किसी देश की सबसे बड़ी विडंबना है।

राजाजी नेशनल पार्क का सैर-सपाटा

दिनांक 18 दिसंबर, 2022 को हडको क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून के अधिकारियों, कर्मचारियों तथा आश्रित सदस्यों का दल एक दिवसीय सैर-सपाटा (Excursion Trip) राजाजी नेशनल पार्क, झिलमिल रेंज, हरिद्वार गया। इस दौरान झिलमिल रेंज में जंगलबीट रिज़ॉर्ट में कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें बेड मिल्टन, म्यूजिकल चेयर, लम्बी लम्बी कदम रख कर भागने आदि के खेल तथा जंगल सफारी अंतर्गत जंगल में तरह-तरह के जंगली जानवर जैसे बारहसिंघे, चीतल, सांभर, लक्कड बघ्घे तथा विदेशी पक्षी आदि देखना शामिल रहा।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का उत्सव

श्री अशोक कुमार लालवानी
संयुक्त महाप्रबंधक(वित्त)

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर देहरादून क्षेत्रीय कार्यालय में दिनांक 21.06.2022 को योग दिवस मनाया गया जिसमें क्षेत्रीय प्रमुख, संजय भार्गव के मार्गदर्शन में समस्त स्टाफ ने योग क्रिया में भाग लिया और योग-साधना के महत्व को जाना। इस मौके पर सभी अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा योग के विभिन्न आसन कराए गए। इस अवसर पर क्षेत्रीय प्रमुख ने सभी को नियमित योग करके स्वस्थ रहने का सुझाव दिए एवं अवगत कराया गया कि योग भारत के इतिहास का अभिन्न अंग है जिसमें सदियों से हमारे ऋषि-मुनियों द्वारा शोध एवं विकास किया गया। योग से मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है इसे निरंतर करते रहने से रोग समीप नहीं आते है। इसके साथ ही हडको मुख्यालय द्वारा आयोजित योग कार्यक्रम में सभी कर्मचारियों ने भाग लिया।

हडको कर्मियों द्वारा किये गए विभिन्न योगासन

घस्यारी रानी

विवेक प्रधान
प्रबंधक (परियोजना)

उत्तराखंड की स्थानीय भाषा में 'घस्यारी' शब्द का प्रयोग उन महिलाओं के लिये किया जाता है, जो चरागाहों और जंगलों से पशुओं के लिये चारा लाती हैं। घसियारी, या घास काटने वाली महिलाएं, उत्तराखंड की ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं और चिपको आंदोलन से लेकर उत्तराखंड आंदोलन से लेकर अवैध बांध और औद्योगिक परियोजनाओं के खिलाफ चल रहे संघर्षों तक राज्य में न्याय के लिए हर संघर्ष में सबसे आगे रही हैं। घस्यारी यह सुनिश्चित करते हैं कि पेड़ों को कोई नुकसान न हो और जंगलों से खरपतवारों को स्थायी रूप से हटाया जाए, लेकिन डाउन हिल माइग्रेशन और बदलती मानसिकता के साथ, उनकी पारिस्थितिक सेवाओं पर किसी का ध्यान नहीं जा रहा है।

पहाड़ी पारिस्थितिकी में पहाड़ी महिलाओं के योगदान को उजागर करने के लिए, उत्तराखंड के टिहरी गढ़वाल जिले की भिलंगना तहसील में चामिल्याला नामक एक छोटे से गांव में 5 जनवरी, 2016 को 'चेतना आंदोलन' नमक संस्था द्वारा 'घस्यारी रानी' नाम से एक अनोखा प्रतियोगिता आयोजित की गई थी, इस प्रतियोगिता में केवल दो मिनट में अधिकतम घास काटने हेतु महिलाओं को तैयार किया गया। जिससे प्रत्येक किलोग्राम चारे के लिए 10 अंक तय किए गए। इस प्रतियोगिता में 112 गांवों की लगभग 30 महिलाओं ने भाग लिया। विजेता को पशुधन के लिए औषधीय जड़ी-बूटियों की मात्रा, गुणवत्ता, ज्ञान और इसके उप-उत्पादों के विभिन्न उपयोगों के आधार पर आंका गया। यदि उनके संग्रह में हरी पत्तियाँ या झाड़ियाँ पाई गईं तो प्रतियोगियों को अयोग्य घोषित कर दिया गया। अमरसर, बसर की श्रीमती रायजा देवी ने घस्यारी क्वीन, मालद क ी

श्रीमती यमुना देवी, नेलचामी प्रथम रनर अप और अलवा, अरगढ़ की श्रीमती अब्बाली देवी द्वितीय स्थान पर रहीं।

हाल ही में 'मुख्यमंत्री घस्यारी कल्याण योजना' की शुरुआत की गई। इस योजना के जरिए अब उत्तराखंड की ग्रामीण महिलाओं को पशु चारा के लिए जंगलों पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा। इसके साथ ही उन ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को ज्यादा फायदा होगा जिनको जंगल से चारा इकट्ठा करने के दौरान जंगली जानवरों से जो संघर्ष होता था या किसी दुर्घटना से शारीरिक क्षति हो जाती थी उन घटनाओं में भी इस योजना से कमी आएगी। इस योजना से जुड़े मुख्य विशेषताएं कुछ इस प्रकार से हैं:-

इंटरनेट स्रोत

- राज्य के सहकारिता विभाग के अंतर्गत प्रारंभ की गई इस योजना के तहत पशुपालक परिवार की हर महिला को राज्य सरकार की ओर से एक किट दी जाएगी, जिसमें दो कुदाल, दो दरांती, एक पानी की बोतल और एक टिफिन शामिल होगा।
- साथ ही योजना के तहत 7,771 केंद्रों के माध्यम से सुदूर ग्रामीण पर्वतीय क्षेत्रों में पशुओं के लिये पौष्टिक चारे की आपूर्ति की जाएगी। इन क्षेत्रों में पशुपालकों पैकेज्ड साइलेज एवं टोटल मिक्सड राशन प्रदान किया जाएगा।
- इस योजना के क्रियान्वयन से महिलाओं को चारे के कार्य से मुक्ति मिलने के साथ प्रदेश के पशुपालन संबंधी आधारित अर्थशास्त्र में सुधार होगा, क्योंकि राज्य की 70 प्रतिशत से अधिक आबादी की आजीविका का प्रमुख स्रोत कृषि एवं पशुपालन है।

महापुरुषों से संबंधित सूक्तियां

``राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना
देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।''

-महात्मा गांधी

``हिन्दी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी
होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।''

-डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

``भारतीय सभ्यता की अविरल धरा प्रमुख रूप से हिन्दी भाषा है,
जिसे बिना भेदभाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है। ''

-मदन मोहन मालवीय

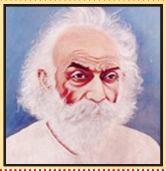

``हिन्दी राष्ट्रीयता के मूल सींचती है और उसे दृढ़ रकती है।''

-पुरुषोत्तम दास टंडन

``हिन्दी हमारी राष्ट्र की अभिव्यक्तिा का सरलतम स्त्रोत है। ''

-सुमित्रानंदन पंत

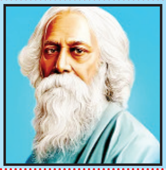

``भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिन्दी महानदी।''

-रवीन्द्रनाथ ठाकुर

``हिन्दी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है। ''

-स्वामी दयानंद सरस्वती

(08.08.1976 - 19.12.2022)

दिवंगत आत्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि।

छूट गई दोस्ती, छूट गया साथ।
पाठक जी थे, सबके खास ।।

यादें उनकी, है सबको आती।
देख सीट को, हमें भरमाती ।।

सह गया दुःख, पर नहीं बताया।
फिर भी वो, ऑफिस में आया।।

छूट गई दोस्ती, छूट गया साथ।
पाठक जी थे, सबके खास ।।

हडको क्षेत्रीय कार्यालय

कोटेश्वर महादेव, उत्तराखंड

हाउसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लि.
(भारत सरकार)
देहरादून क्षेत्रीय कार्यालय
74/1, राजपुर रोड, जीएमवीएन बिल्डिंग, द्वितीय तल, देहरादून
दूरभाष : 0135-2748405
ई-मेल : dro@hudco.org

हडको जीवन गुणवत्ता में सुधार के लिए सबके लिए सतत् पर्यावास को बढ़ावा देता है।

सबके लिए आवास | कार्मिक प्रशिक्षण | परामर्श सेवाएं
सी एस आर के लिए प्रतिबद्ध | अर्बन इंफ्रास्ट्रक्चर

वर्ष 1970 से भारत में आवास और शहरी अव–संरचना परियोजनाओं को ऋण उपलब्ध कराते हुए हडको भारत की प्रमुख तकनीकी वित्त पोषक कम्पनी है जो अनवरत विकास के साथ ईडब्लूएस/एलआईजी श्रेणी के आवास जरूरतों पर विशेष जोर देती है।

अनुरोध

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका ''देवालय'' के सफल प्रकाशन के पश्चात तृतीय संस्करण आपके समक्ष प्रस्तुत है। यद्यपि इस प्रकाशन को बहुत सावधानी पूर्वक तैयार करने का प्रयास किया गया है फिर भी कतिपय त्रुटियों से इन्कार नहीं किया जा सकता। पाठकगणों से अनुरोध है कि वे इंगित त्रुटियों एवं अपने अमूल्य सुझावों से अवगत कराने का कष्ट करें।

सादर!

बलराम सिंह चौहान
प्रबंधक (आई.टी.)/
नोडल सहायक (राजभाषा)